वर्ष :: 33 अंक : 46
पृष्ठ : 16:: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन

स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: मंगलवार, 15 अगस्त, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

शुभकामना

'मिथिला वर्णन' परिवार की ओर से समस्त देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

आजाद भारत की बदलती तस्वीर!

-: विजय कुमार झा :-

आज हम भारतवासी अपनी आजादी की 76वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता और उसके दमनकारी रवैये के खिलाफ 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा देकर भारतीय स्वधीनता संग्राम के महानायक चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, सरदार भगत सिंह, मंगल पांडेय, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, रानी लक्ष्मी बाई, तिलका मांझी समेत देश के कितने ही असंख्य सपूतों ने इसी आजादी की खातिर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया और कितने ही वीर सपूतों ने क्रूर विदेशी शासन की यातनाएं सहीं। दशकों के संघर्ष के बाद 15 अगस्त, 1947 को हिन्दुस्तान अंग्रेजों की गुलामी से आजाद तो हुआ, लेकिन इसके साथ ही भारत के विभाजन की ऐसी विभीषिका हमारे सामने आयी, जिसकी टीस हमारे दिलों में आज भी उठती रहती है।

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण यह रहा कि अंग्रेजी हुकूमत के खत्म होने के लगभग 75 वर्षों बाद भी हमारी न्यायिक व्यवस्था अंग्रेजों द्वारा बनाये गए कानूनों आधार पर ही चलती रही और इतने वर्षों के अंतराल में किसी भी सरकार ने उसमें बदलाव लाने की जरूरत नहीं समझी। लेकिन, आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए अंग्रेजों के बनाये हुए तीन महत्वपूर्ण कानूनों को खत्म कर उसकी जगह तीन नए कानून पेश कर दिए हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने 11 अगस्त को इन्हें लोकसभा में पेश करते हुए कहा कि यह गुलामी की सभी निशानियों को समाप्त करने की दिशा में उठाया गया कदम है। अब तक जो कानून है, उसमें दंड दिए जाने की अवधारणा है, जबकि नए कानून में देश के लोगों के लिए न्याय देने का प्रावधान किया गया है, जो अब तक का सबसे प्रभावी कदम है। पिछले चार वर्षों तक इन कानूनों को लेकर गहन विचार-विमर्श हुआ और इस पर हुई 158 बैठकों में वह खुद उपस्थित रहे।

अंग्रेजों के बनाये इन कानूनों में बदलाव का मसौदा फिलहाल लोकसभा में पेश किया गया है और वहां से पारित होने के बाद इसे राज्यसभा में पेश किया जाएगा। वहां से पास होने के बाद राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ ही ये तीनों कानून देश में प्रभावी हो जाएंगे। माना यह भी जा रहा है कि नई व्यवस्था में लोगों को समयबद्ध न्याय की व्यवस्था की गई है। अगर दोनों सदनों से ये संशोधित कानून पारित हो गये तो फिर राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ ही आजाद भारत की एक अलग तस्वीर सामने आएगी। **(शेष पेज- 7 पर)**

पुलिसिया दमन से आजादी

दरअसल, केन्द्र सरकार अब राजद्रोह को पूरी तरह से खत्म करने जा रही है, क्योंकि भारत में लोकतंत्र है और यहां सबको बोलने का अधिकार है। पहले आतंकवाद की कोई व्याख्या नहीं थी, लेकिन अब सशस्त्र विद्रोह, विध्वंसक गतिविधियां, अलगाववाद, भारत की एकता, संप्रभुता और अखंडता को चुनौती देने जैसे अपराधों की पहली बार इस कानून में व्याख्या की गई है। अनुपस्थिति में ट्रायल के बारे में एक ऐतिहासिक फैसला किया है, जिसमें सेशन्स कोर्ट के जज द्वारा भगोड़ा घोषित किए गए व्यक्ति की अनुपस्थिति में ट्रायल होगा और उसे सजा भी सुनाई जाएगी, चाहे वो दुनिया में कहीं भी छिपा हो, उसे सजा के खिलाफ अपील करने के लिए भारतीय कानून और अदालत की शरण में आना होगा। कानून में कुल 313 बदलाव किए गए हैं, जो हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में एक आमूलचूल परिवर्तन लाएंगे और किसी को भी अधिकतम 3 वर्षों में न्याय मिल सकेगा। इस कानून में महिलाओं और बच्चों का विशेष ध्यान रखा गया है, अपराधियों को सजा मिले यह सुनिश्चित किया गया है और पुलिस अपने अधिकारों का दुरुपयोग न कर सके, ऐसे प्रावधान भी किए गए हैं। हम उम्मीद करते हैं कि सरकार द्वारा पेश किया गया यह नया कानून संसद के दोनों सदनों से जल्द ही पारित होकर देश के नागरिकों को त्वरित न्याय दिलाने की दिशा में सार्थक सिद्ध होगा। आप सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

सहज, सरल व सुलभ न्याय की पहल

दरअसल, आजादी के समय से अंग्रेजों द्वारा बनाए गए जो कानून देश में लागू रहे, अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें केवल अपनी रक्षा और अपने हितों को ध्यान में रखकर बनाया था। उसमें हिन्दुस्तानियों को न्याय देने की जगह उन्हें दंडित किये जाने का प्रावधान था। जबकि, भारत सरकार ने देश के नागरिकों को संविधान में दिए गए अधिकारों की रक्षा तथा उन्हें दंड की जगह न्याय देने के लिए यह कानून लाया है। इन तीन कानूनों से हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में अब 533 धाराएं रहेंगी। जबकि, अब तक इसमें 478 धाराएं थीं। 160 धाराओं को बदल दिया गया है। 9 नई धाराएं जोड़ी गई हैं, जबकि 9 धाराओं को निरस्त किया गया है। इसी तरह भारतीय न्याय संहिता में पहले की 511 धाराओं की जगह अब 356 धाराएं होंगी। 175 धाराओं में बदलाव किया गया है। 8 नई धाराएं जोड़ी गई हैं और 22 धाराओं को निरस्त किया गया है। जबकि, भारतीय साक्ष्य विधेयक की जगह पहले की 167 के स्थान पर अब 170 धाराएं होंगी। इसमें 23 धाराओं में बदलाव किया है। 1 नई धारा जोड़ी गई है और 5 धाराएं निरस्त की गई हैं।

chinarsteelkol@gmail.com

Chinar Steel Segment

CENTRE PVT. LTD.

Price • time • quality

Industrial suppliers & Dealers

समस्त भारतवासियों को

76वें स्वतंत्रता दिवस की

हार्दिक शुभकामनाएं।

Works at : (i). Opp. Hanuman Mandir, Jodhadih More, Chas, Bokaro- 827013, Ph.- 06542-265661

(ii). Plot No.- 1551, Jamgaria, Chas (Bokaro), Pin- 827013 (JH)

(iii). 2/A/7/E/A/C, Nimaitirtha Road, Mahavir Complex, Baidyabati, Dist.- Hooghly (W.B.)

Ph. No. : 033-2231 0480, 4007 0624 | E-mail : chinarsteel@gmail.com

– संपादकीय –

चाहिए एक और 'आजादी'

'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा...'। महान लेखक इकबाल के लिखे इस गीत की पंक्तियां भारतीय सभ्यता, परंपरा, संस्कृति और भाईचारे की मिसाल पेश करती हैं। विविधता या अनेकता में एकता ही हमारी पहचान रही है। इकबाल ने लिखा भी है - 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना...'। लेकिन, आज की विडंबना देखिए कि मजहब तो मजहब, जाति, जनजाति के नाम पर भी देश जल रहा है। जगह-जगह खून-खराबे हो रहे हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में भयावह हिंसा हो रही है। मणिपुर में पिछले तीन महीने से हिंसा जारी है। इसमें करीब 100 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं और लगभग एक लाख लोग बेघर हो गए हैं। मरने वालों में कुकी लोगों की संख्या ज्यादा है और विस्थापितों में कुकी, नागा और जो लोगों की। ये तीनों आदिवासी समुदाय हैं, जिनकी बहुसंख्यक आबादी ईसाई है। मैतेई और कुकी की इस लड़ाई में मणिपुर में तीन महिलाओं के साथ जो व्यवहार हुआ, उसने पूरे देश को शर्मसार किया है। यह उन बलिदानियों के संघर्षों को कलंकित करने जैसा है, जिन्होंने देश की आन-बान और शान की खातिर अपने प्राणों की आहुतियां दे दी थीं। कराह रही होंगी उन महापुरुषों की आत्मा, जिन्होंने भारत को शांति, उन्नति और प्यार का चमन बनाने के स्वप्न देखे थे। जिस देश में नारी देवी के रूप में पूजनीय हों, जहां झांसी की रानी जैसी वीरांगनाओं ने देश को आजादी दिलाने में हंसते-हंसते वीरगति को प्राप्त कर लिया, उसी भारत में जब महिलाओं के साथ अमानवीयता की पराकाष्ठा हो, उन्हें निर्वस्त्र कर सरेआम घुमाया जाता हो और गोली मार दी जाती हो, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य भला और क्या हो सकता है? आज हमारे समाज में नफरत का बोलबाला है। देश मणिपुर की हिंसा से अब तक उबरा नहीं कि हरियाणा का मेवात जल उठा। पशु तस्करी के आरोप में दो लोगों की हत्या कर दी गई। तीर्थयात्रा के दौरान हिंसा भड़क उठी। सैकड़ों गाड़ियां फूंक दी गईं। आखिरकार, ऐसे मामलों में कहां चूक होती है और देश क्यों दंगे की आग में जलता है, इस पर समीक्षा करने की जरूरत है। सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि जिस तरह से इस पर घृणित राजनीति होती है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। अपने वोट बैंक की खातिर हमारे राजनेता देश को नफरत की आग में झोंकने से बाज नहीं आते। दूसरी तरफ, आज नक्सलवाद की ऐसी स्थिति है कि देश में यह आतंकवाद से ज्यादा भारी दिख रहा है। आए दिन हमारे वीर जवान तथाकथित सामाजिक बदलाव की वकालत करने वाले माओवादियों से लड़ते-लड़ते शहीद हो रहे हैं। हरसाल दर्जनों नक्सली हमले होते हैं और जवानों की शहादत कई परिवार बिखेर देती है। अनाचार, व्यभिचार के साथ-साथ भ्रष्टाचार आज एक ऐसा दीमक है, जो देश को अंदर ही अंदर खोखला करता चला जा रहा। आए दिन बड़े-बड़े आईएएस-आईपीएस अफसरों व शीर्ष स्तर के नेताओं की भ्रष्टाचार में संलिप्तता के मामले सुर्खियों में छाए रहते हैं। कानून-व्यवस्था ऐसी है कि आम आदमी पुलिस-थाने के नाम से ही कांप जाता है। कुल मिलाकर कहें, तो हमने अंग्रेजों से तो आजादी पा ली, लेकिन सही मायने में आजादी अब भी बाकी है। जब तक देश दंगों की आग में झुलसता रहेगा, भ्रष्टाचाररूपी सांप सिस्टम को डंसता रहेगा और हमारे सियासतदां केवल अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकते रहेंगे, तब तक हम सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं कहला सकते। आज देश में एक और स्वाधीनता संग्राम की अनिवार्यता है, जिसमें हमें नफरत रूपी अंग्रेजों और समाज के दुश्मनों से मुकाबला करना ही होगा। ऐसे प्रशासनिक तंत्र और पुलिस बल की जरूरत है, जो बहुवाद और विविधता के मूल्यों के प्रति संवेदनशील हों। हमारे पूर्वजों ने असीमित यातनाएं सहीं, अब नए जख्म न पैदा हों, इसकी कोशिश की जानी चाहिए। तभी हमारे देश के असंख्य वीर सपूतों के सपने साकार होंगे, उनके द्वारा लड़ी गई स्वतंत्रता की लड़ाई सार्थक सिद्ध होगी, हम सही मायने में भारत को सारे जहां से अच्छा साबित कर सकेंगे और विश्वगुरु बनने का सपना पूरा कर सकेंगे। देश की आजादी की 76वीं वर्षगांठ पर हम सभी को इसके लिए संकल्पित होने की जरूरत है।

जय हिन्द!

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

'जय हिन्द' का नारा उनका

जिसे गुलामी से नफरत हो,
आजादी से प्यार।
नस-नस का हो खून गरम,
जो रहा हिलोरें मार।।

स्वाभिमान हो जिन्दा जिसका,
चुप हो बैठ नहीं सकता।
और घूंट अपमान का पीकर,
जिन्दा कैसे रह सकता?

ऐसे में कुछ और नहीं,
बस बचता एक डगर है।
कसना पड़ता कमर वीर को,
होता घोर समर है।।

राहों की बाधाओं का,
करना होता प्रतिकार।
कलम पकड़ने वाले,
कर में भी होती तलवार।।
कर्म धर्म सब देश की सेवा,
देश से महती प्यार।
उसे कहां निज प्राण की चिंता,
शीश कटाने को तैयार।।

रणभूमि में हरा शत्रु को,
युद्ध जीतकर आता है।
या फिर वीरगति को पाकर,
वह शहीद कहलाता है।।

कर गठित फौज आजाद हिन्द,
नेताजी भी रण-राह धरे।।
बढ़ चले हौसला साथ लिए,
जर्मन जापान थे साथ खड़े।।

कुछ भू-भागों को करा मुक्त,
अपना था झंडा गाड़ दिया।
कुछ देशों से मान्यता प्राप्त,
गठित एक सरकार किया।
हिल गई हुकूमत अंग्रेजी,
रहने लगी थी डर डर कर।
अब और यहां शासन करना,
आसान नहीं रह गया डगर।।

हिम्मत कर के काश कि ,
तत्क्षण सारे जाग गए होते।
सिर पर रखकर पैर तभी ही,
गोरे भाग गए होते।।

'जय हिन्द' का नारा उनका,
गूंज रहा कण-कण में।
सदा ही जीवित रहेंगे,
नेताजी जन-जन के मन में।।

- सुधीर कुमार झा -
कोलकाता।

आयल शुभ पन्द्रह अगस्त!

फेरी लगबै सब अहले भोर,
भागल अन्हार मे छलै चोर,
क' मातृभूमि खण्ड अलग
कैलक सभटा कें अस्त-व्यस्त।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त।।

हम भ' स्वतन्त्र छी नाचि रहल,
बलिदानक गाथा गाबि रहल
वीर सपूतक नमन हेतु
उमरल नर-नारी अछि समस्त।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त।।

अछि तीन रंग मे शान हमर,
जन-गन-मन मुखरित गान हमर,
चक्रक गति अछि निर्बाध सतत
अरि दल कें करबै सतत पस्त ।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त ।।

सब गान करी अभिमान करी,
जननी वसुधा केर मान करी,
पूरब मे सब दिन सूर्योदय
पच्छिम मे निश्चय होय अस्त।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त ।।

संकल्प करी हम आई एक,
पुत्र धर्म केर राखि टेक,
माता रक्षा केर हित सोचब
आजादी मे रहि सतत मस्त ।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त ।।

सीमा सरहद सेना चौकी,
नहिँ अबरजात टोका टोकी,
यदि तुच्छ विचारें डेग धरत
करबै सब मिलि के आश नष्ट
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त।।

उत्तर पहाड़ दच्छिन सागर,
गंगा जमुना सतलुज धाधर,
रावी सँ कावेरी धरि सब
उत्थान हेतु अछि देश व्यस्त।
आयल शुभ पन्द्रह अगस्त।।

मैथिली कविता
– शम्भुनाथ –

हरितिमा बढ़ाने को आगे आया जीजीएसईएसटीसी

संवाददाता

बोकारो : गुरु गोविंद सिंह एजुकेशनल सोसाइटीज टेक्निकल कैम्पस, कांड्रा (बोकारो) स्थित इंजीनियरिंग एण्ड मैनेजमेंट कॉलेज की एनएसएस इकाई की ओर से अगस्त क्रांति दिवस के साथ-साथ विश्व आदिवासी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के निर्देश के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थानीय इकाई के स्वयंसेवी छात्रों द्वारा मेरी मांटी, मेरा देश- वसुधा वंदन कार्यक्रम आयोजित कर आजादी के 75 साल (अमृत महोत्सव) पूरे होने के उपलक्ष्य में कॉलेज परिसर में लाल चंदन, आंवला, नीम, साल, कटहल, पीपल, करंज, कदम्ब सहित 75 पौधे लगाये गए और इसके संरक्षण की जिम्मेदारी संस्थान द्वारा गठित ग्रीन आर्मी के सदस्यों को दी गई।

समारोह को संबोधित करते हुए गुरु गोविंद सिंह एजुकेशनल सोसाइटी के सचिव एस पी सिंह ने आजादी के दीवानों द्वारा 9 अगस्त 1942 से प्रारंभ क्रांति (अगस्त क्रांति) के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि यह आजादी हमें लम्बे संघर्ष के बाद मिली है। ऐसे में अपनी परम्पराओं को लेकर चलना और उसका सम्मान करना हमारा फर्ज है। उन्होंने कहा कि अपनी क्षमता के अनुसार हम अपने लिए जो कुछ कर रहे हैं, वह तो करें, लेकिन इसके साथ-साथ देश, समाज और विश्व के की भलाई के लिए हम क्या कर रहे हैं, इस बारे में भी हमें सोचना होगा।

श्री सिंह ने गुरु नानक की वाणी का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका कथन है कि पवन गुरु हैं, ईश्वर से भी बड़ा स्थान गुरु का है। पवन के बिना हम एक क्षण भी नहीं रह सकते। इसलिए प्रकृति के संतुलन को संरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है।

इसके पूर्व जीजीएसईएसटीसी के निदेशक डॉ. प्रियदर्शी जरुहार ने स्वागत भाषण करते हुए अगस्त क्रांति के ऐतिहासिक महत्व पर रोशनी डाली। साथ ही, आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन के अधिकारों पर बात की। उन्होंने कॉलेज में ग्रीन आर्मी के गठन के उद्देश्य पर विस्तृत प्रकाश डाला। कहा कि कॉलेज के 150 बच्चों के सहयोग से ग्रीन आर्मी बनाई गई है, जिसका उद्देश्य पौधों के संरक्षण के साथ ही अपने आसपास में स्वच्छता का वातावरण बनाये रखना है। उन्होंने संस्थान की उल्लेखनीय प्रगति की चर्चा करते हुए कहा कि यहां से तैयार बच्चे न सिर्फ झारखंड में, बल्कि पंजाब सहित अन्य राज्यों में अपना परचम लहरा रहे हैं।

इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी ए पी बर्णवाल, कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सुषमा कुमारी, कांड्रा के सरपंच उपेन्द्र पांडेय सहित अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. सुषमा कुमारी व ग्रीन आर्मी का समन्वयन प्रो. अपूर्वा सिन्हा ने किया। जबकि, प्रो. सिद्धलाल हेम्ब्रम, श्रीमती अनुवर्तित एक्का, गुरमेल सिंह व अनिल सिंह ने योगदान दिया। संस्थान अध्यक्ष तरसेम सिंह ने इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं दीं।

'टाइगर' की 'मांद' में अब कौन?

सियासत... डुमरी विधानसभा उपचुनाव की सरगर्मी तेज, प्रशासन भी तैयार

संवाददाता
बोकारो : जिले के डुमरी विधानसभा उप-चुनाव के लिए अधिसूचना जारी हो चुकी है। आगामी 5 सितम्बर को होगा। जिला प्रशासन की ओर से निष्पक्ष व स्वतंत्र मतदान की सारी तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं। बोकारो के जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कुलदीप चौधरी के अनुसार 17 अगस्त तक नामांकन की प्रक्रिया और 18 अगस्त को नामांकन प्रपत्रों की जांच के बाद नामांकन वापसी की प्रक्रिया 21 अगस्त तक चलेगी और मतदान 5 सितम्बर को होगा। जबकि, मतगणना 8 सितम्बर को होगी। 10 सितम्बर को निर्वाचन की पूरी प्रक्रिया सम्पन्न होगी। मतदान में 2986629 महिला एवं 139032 पुरुष मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर सकेंगे।

उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार के शिक्षा एवं उत्पाद मद्य निषेध मंत्री जगरनाथ महतो के निधन के कारण यह उप-चुनाव कराया जा रहा है। फिलहाल स्व. महतो की पत्नी बेबी देवी को उनके स्थान पर शिक्षा मंत्री का दायित्व दिया गया है। अब उपचुनाव के बाद टाइगर के रूप में विख्यात रहे स्व. महतो के सियासी गढ़ में कौन अपना वर्चस्व बना पाएगा, यह चर्चा इन दिनों क्षेत्र में आम है। वैसे, बेबी देवी भी चुनावी मैदान में रहेंगी, लेकिन उन्हें कौन टक्कर देगा, इसे लेकर अटकलबाजियां जोर-शोर से चल रही हैं।

उपचुनाव के लिए सरगर्मी तेज हो गई है। इसके लिए प्रशासनिक स्तर पर भी जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। इसी कड़ी में जिले के उपायुक्त सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी कुलदीप चौधरी और पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने नावाडीह प्रखंड के विभिन्न क्लस्टरों एवं मतदान केंद्रों का जायजा लिया। उनके साथ इस मौके पर बेरमो के अनुमंडल पदाधिकारी शैलेश कुमार, जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी धीरेंद्र कुमार, सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी नावाडीह अशोक कुमार आदि उपस्थित थे। सभी पदाधिकारियों ने क्लस्टर केंद्रों पर सेक्टर दंडाधिकारियों, मतदान कर्मियों के ठहरने को लेकर की जाने वाली व्यवस्था को लेकर चर्चा की। केंद्र पर पेयजल-शौचालय आदि की समुचित व्यवस्था हो इस बाबत जरूरी निर्देश दिए। डीसी ने क्लस्टर पर पंखा, प्रकाश, जनरेटर आदि की समुचित व्यवस्था करने को कहा, ताकि मतदान कर्मियों के आवासन में कोई परेशानी नहीं हो।

डीसी-एसपी समेत अन्य पदाधिकारियों ने नावाडीह प्रखंड के हाई स्कूल बिरनी, प्लस टू उच्च विद्यालय भेंडरा, मध्य विद्यालय सहरिया, सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस नावाडीह, मध्य विद्यालय आहारडीह, मध्य विद्यालय सुरही आदि क्लस्टर सह मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। मौके पर डीसी-एसपी ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर की जाने वाली तैयारियों पर चर्चा की और पुलिस पदाधिकारी, थाना प्रभारी को जरूरी निर्देश दिया। मौके पर नावाडीह बीडीओ प्रशांत कुमार, जिला आपदा प्रबंधन पदाधिकारी शक्ति कुमार, नोडल पदाधिकारी पंकज दूबे, विभिन्न थानों के थाना प्रभारी आदि उपस्थित थे।

डुमरी विधानसभा क्षेत्र में गिरिडीह जिले के डुमरी, निमियाघाट क्षेत्र में कुल 199 मतदान केंद्र हैं। वहीं, बोकारो जिले में (नावाडीह एवं चंद्रपुरा प्रखंड) कुल 174 मतदान केंद्र हैं।

बोकारो थर्मल की गोल्डन गर्ल आशा ने बढ़ाया भारत का मान

स्पेन में लहराया तिरंगा, 2 मिनट 4.99 सेकेंड में 800 मीटर दौड़ने वाली बनी झारखंड की पहली एथलीट

संवाददाता
बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल की गोल्डन गर्ल आशा किरण बारला ने स्पेन में अपने प्रदर्शन से झारखंड सहित देश का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता में पदक जीत आशा झारखंड की पहली एथलीट होने का भी गौरव प्राप्त किया है। स्पेन के त्रिवागो में 4 से 13 अगस्त तक आयोजित यूथ कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत की 35 सदस्य

एथलीटों में बोकारो थर्मल के भाटिया एथलेटिक्स एकेडमी की झारखंड से प्रतिनिधित्व करने वाली आशा किरण बारला ने भी भाग लिया।

आशा ने प्रतियोगिता में 800 मीटर की दौड़ में 2 मिनट 4.99 सेकेंड में पूरा कर रजत पदक जीतकर भारत का मान सम्मान बढ़ाया है। साथ ही ऐसा करने वाली झारखंड की पहली एथलीट भी बनने का गौरव प्राप्त किया है। आशा किरण बारला की इस उपलब्धि पर भाटिया एथलेटिक्स एकेडमी परिवार में शुक्रवार को जश्न का माहौल देखा गया।

एकेडमी के सचिव सह प्रशिक्षक आशु भाटिया ने बताया कि आशा का प्रदर्शन उम्मीद से बढ़कर है। इस परिणाम के लिए उसने काफी मेहनत की थी, जिसका फल उसे प्राप्त हुआ है। आशा की उपलब्धि पर एकेडमी के अध्यक्ष विजय भाटिया, कोषाध्यक्ष गौतम चंद्र पाल, बालमुकुंद प्रजापति, गंगाधर यादव सहित सभी एथलीटों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

पहल 16 एकड़ भूमि पर लहलहाएगी फसल, जैविक खाद और सोलर पंप से होगी सिंचाई

आदिवासी किसानों की मदद को आगे आई वेदांता ईएसएल

संवाददाता
बोकारो : विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड ने चंदनकियारी और आसपास के आदिवासी किसानों की मदद को बड़ा कदम उठाया। नाबार्ड के साथ मिलकर उनके प्रतिष्ठित साथी कार्यान्वयन एजेंसी ग्रामीण सेवा संघ के साथ विभिन्न सुविधाओं का शुभारंभ किया, जो कुंवरपुर गांव के आदिवासी लोगों के जीवन-यापन को सुदृढ़ बनाएगी। इसके तहत 10 जैविक खाद इकाइयां शामिल हैं, जिसमें हर बेड पर 10 किसान जुड़ेंगे और एक सोलर पंप हाउस होगा और इसकी सहायता से वाडी प्रोजेक्ट के हिस्से के रूप में 16 एकड़ कृषि भूमि को सिंचाई की सुविधा मिलेगी।

कम्पनी की ओर से बताया गया कि वाडी प्रोजेक्ट 2020-21 वित्तीय वर्ष में शुरू हुआ, जो चास और चंदनकियारी ब्लॉक में 8 गांवों में आज बदला का जरिया बना है। इन गांवों में भागाबांध, हुटुपाथर, पारटांड़, कुंवरपुर, नेपुरचक, आसनसोल, तेतुलिया और पश्चिम महाल शामिल हैं। वाडी प्रोजेक्ट वह हिस्सा है, जो को संवर्धनशील प्रथाओं को बढ़ावा देने और आदिवासी समुदायों को समग्र समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करता है।

इस अवसर पर वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड के सीएसआर के उप-प्रमुख राकेश कुमार मिश्रा ने जैविक खाद शेड और सोलर संचालित पंप हाउस का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में ग्रामीण सेवा संघ के प्रमुख प्रतिष्ठान उनके साथ शामिल हुए, जिनमें जीएसएस के अध्यक्ष पिंटू लाल और कोषाध्यक्ष मनोज देशमुख शामिल थे।

हफ्ते की हलचल

क्यूसी ट्रॉफी प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के मानव संसाधन विकास विभाग के मेन ऑडिटोरियम में अधिशासी निदेशक (संकार्य) क्वालिटी सर्किल ट्रॉफी प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी मुख्य अतिथि तथा अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूम में शामिल थे। प्रतियोगिता में कुल 35 टीमों ने हिस्सा लिया था, जिसमें 22 टीम को स्वर्ण पुरस्कार, 07 टीम को रजत पुरस्कार तथा 06 टीम को कांस्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन बिजनेस एक्सीलेंस विभाग के द्वारा किया गया तथा इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक गण, विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी गण तथा क्वालिटी सर्किल टीम के सदस्य उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में फुटबॉल प्रतियोगिता

बोकारो : दामोदर घाटी निगम, चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र प्रबंधन द्वारा स्थानीय फुटबॉल मैदान में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई। अंतर विद्यालय फुटबॉल प्रतियोगिता में डिनोबिली विद्यालय की छात्र टीम ने डीवीसी मिडिल विद्यालय की छात्र टीम को टाईब्रेकर के सहारे 1-शून्य से पराजित किया। प्रथम पाली में केंद्रीय विद्यालय और डिनोबिली के छात्रों के बीच मैच खेला गया। केंद्रीय विद्यालय की टीम ने 1 गोल और डिनोबिली विद्यालय की टीम ने 2 गोल हासिल किये। डिनोबिली विद्यालय ने 1 गोल से जीत हासिल की। इसी तरह डीवीसी + 2 विद्यालय और डीवीसी मध्य विद्यालय के खिलाड़ियों के बीच हुए मैच में टाई ब्रेकर के सहारे डीवीसी मध्य विद्यालय के खिलाड़ियों ने 4 - 3 गोल देकर एक गोल से जीत हासिल की। फाइनल मैच में डीवीसी मध्य विद्यालय और डिनोबिली के बीच हुए मैच में टाईब्रेकर के सहारे डिनोबिली के खिलाड़ियों ने एक - 0 गोल से जीत हासिल की। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि उप महाप्रबंधक राजीव रंजन ने विजेता और उपविजेता टीम को शील्ड प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

कारगिल योद्धा के पुत्र को आईआईटी भुवनेश्वर में दाखिला

बोकारो : सीएसबीएसई 12वीं बोर्ड की परीक्षा में कारगिल लड़ाई में दमदार भूमिका निभाने पूर्व सैनिक सतीश कुमार झा के छोटे पुत्र एवं स्थानीय चिन्मया विद्यालय से 92 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण रहे शशांक झा ने कुशल मेधाविता का परिचय दिया है। आईआईटी जेईई प्रवेश परीक्षा यूपीएससी के बाद भारत की दूसरी सबसे कठिन परीक्षा मानी जाती है। दो राउंड यानी आईआईटी जेईई मेन्स और आईआईटी जेईई एडवांस्ड को पास करने वाले छात्रों को आईआईटी कॉलेजों में प्रवेश पाने के लिए चुना जाता है। दो वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद इस प्रवेश परीक्षा शशांक ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) भुवनेश्वर में दाखिला पाया है। इसके पहले उनके बड़े पुत्र शुभम झा बैंगलोर से कंप्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग कंप्लीट कर चुके है और ओरेकल मल्टी नेशनल कंपनी में ज्वाइन करने वाले हैं। सतीश ने बताया कि बच्चों की मेधाविता पढ़ाई के लिए दवाब देने से नहीं, बल्कि प्रेमयुक्त समुचित मार्गदर्शन से बढ़ती है। जिस क्षेत्र में बच्चों की रुचि है, उसे वही करने देना चाहिए। मूलतः दरभंगा (बिहार) के तरौनी निवासी तथा बोकारो के चीरा चास निवासी सतीश झा की गृहिणी रीना झा ने भी शुभम और शशांक की प्रतिभा को तराशने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

शिक्षकों व अभिभावकों में समन्वय जरूरी : डॉ. हेमलता

बोकारो : डीपीएस चास में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन कर विद्यार्थियों के प्रदर्शन की समीक्षा की गई। इस अवसर पर विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन ने कहा कि माता-पिता और शिक्षकों का एक ही लक्ष्य होता है, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास और सफलता। माता-पिता, शिक्षक और बच्चे की साझेदारी स्कूली प्रक्रिया को समृद्ध और प्रभावशाली बनाती है। माता-पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं। उनका सहयोग ही विद्यार्थी की पढ़ाई और उनके विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। इस दौरान शिक्षक और अभिभावक बच्चों के शैक्षणिक विकास से संबंधित एक-दूसरे की राय जानने को काफी उत्सुक दिखे। शिक्षकों ने अभिभावकों को खेलकूद व पढ़ाई में बच्चों के प्रदर्शन की जानकारी दी। कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने कहा कि शिक्षक और माता-पिता मिलकर बच्चों में आत्मविश्वास जागृत कर उनकी विशिष्टता को निखारते हैं। दोनों के पारस्परिक सहयोग से ही बच्चों के सुरक्षित वातावरण के विकास में मदद मिलती है।

'जो देश पर मिटे, उसे सौ-सौ सलाम कहना...'

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आकाशवाणी जी- २० के तत्वावधान में 'साहित्य समागम'

साहित्य सम्मेलन में काव्य-रस की बहती रही गंगा

विशेष संवाददाता

पटना : 'जो खुद के लिए जिए, वो इंसान क्या जिया, जो देश पर मिटे, उसे सौ-सौ सलाम कहना।'-- 'पिया बनिता तू सेना के सिपाही, त हमहु गुमान करती'---- 'होते हरिश्चन्द्र टेरेते पुकार फिर, नींद टूट जाती इस देश के निवासी की' ---- 'हमारे इश्क का हरेक निशान रौशन है, तिरंगा शान है हिंदुस्तान रौशन है'--- 'जो शख़्स सब से टूट के मिलता है हर घड़ी, वह शख़्स इत्तेफाक से मेरा कभी तो हो'-- ऐसी ही देश भक्ति और दिल में कसक पैदा करने वाली पंक्तियों के साथ कवियों और कवयित्रियों के कंठ-स्वर से निकली रस-गंगा में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन देर संध्या तक डूबता उतराता रहा। अवसर था, स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर जी- 20 के अंतर्गत प्रसार भारती और आकाशवाणी, पटना द्वारा आहूत 'साहित्य-समागम' का, जिसमें हिन्दी, ऊर्दू, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका और बज्जिका के वरिष्ठ कवियों और कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं का हृदय-ग्राही पाठ किया।

सम्मेलन अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ की अध्यक्षता में आयोजित इस बहुभाषाकवि-सम्मेलन की रस-गंगा की गंगोत्री बनी डा अर्चना त्रिपाठी ने अपनी लम्बी कविता में स्त्री-मन की समस्त वेदनाओं को बाहर निकालती हुई अंत में यह कहती हैं कि 'नारी को देवी न बनाओ/ उसकी पूजा भी मत करो/ उसे स्त्री ही रहने दो!'

ऊर्दू और हिन्दी के मशहूर शायर डा कासिम खुरशीद ने जब अपना यह शेर पढ़ा कि 'हामारे इश्क का हरेक निशान रौशन है, तिरंगा शान है, हिंदुस्तान रौशन है', तो पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। वरिष्ठ कवि मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' की इन पंक्तियों को भी श्रोताओं की खूब सराहना मिली कि 'हैं आप कद्रदां तो फिर चुप रहूं मैं कैसे? कहने को कुछ गज़ल क्यूं यह मन मचल रहा है/ गिरने से मुझे हरदम ये कौन बचा लेता/ साया की तरह कोई मेरे साथ चल रहा है।'

सीतामढ़ी से आए बज्जिका के वरिष्ठ रचनाकार राम किशोर सिंह 'चकवा' ने एक स्त्री की आकांक्षा को प्रकट करते हुए कहा कि 'पिया बनिता तू सेना के सिपाही, त हमहु गुमान करती/करिता सीमा के रखवारी त हमहु गुमान करती।'

वरिष्ठ कवि और भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी डा उपेंद्र नाथ पाण्डेय ने भारतीय नागरिकों की निद्रा तोड़ने की नीयत से ये पंक्तियां पढ़ीं कि 'होते हरिश्चन्द्र टेरते पुकार फिर/ नींद टूट जाती इस देश के निवासी की/ पंत औ प्रसाद, गुप्त, महादेवी, दिनकर के / काव्य-पुष्प-वृन्तों की

अर्चना अमर होती/ गाते रसखान, सूर, मीरा अमर होती।'

शायरा तलत परवीन ने अपना इजहारे-ख़्याल यों किया कि 'दिल को सुकूं मिला है तुझे देखने के बाद/ खुशियों का सिलसिला है तुझे देखने के बाद/ अब लुत्फ क्या मिलेगा किसी शैय की दीद से/ जो लुत्फ मिल रहा है तुझे देखने के बाद!' उनकी इन पंक्तियों ने भी खूब तालियां बटोरीं कि 'हस्ती में मेरी ऐसा सवेरा कभी तो हो/ रहमत का एक साया घनेरा कभी तो हो/ जो शख़्स सब से टूट के मिलता है हर घड़ी/ वह शख़्श इत्तेफाक से मेरा कभी तो हो!'

कवि सुनील कुमार दूबे ने 'सैनिक पुत्र के नाम बूढ़ी मां का पत्र' नामक अपनी रचना में देह के लिए लड़ रहे बलिदानी सिपाहियों की मार्मिक कथा का करूण वर्णन किया। मगही के सुख्यात कवि और मगही अकादमी के पूर्व अध्यक्ष उदय शंकर शर्मा 'कवि जी' मगही में अपनी रचना पढ़ कर श्रोताओं को गाँव की ओर ले गए और उसके प्राणवंत-सौंदर्य से अवगत कराया। सस्वर पढ़ी गयी इन पंक्तियों, 'दुनिया हे मस्त जहां, अपन अपन काम में/ लगे ही चौपाल, आज भी हमर गांव में/ होली, दसहरा, ईद गांव के सिंगार/ एक दोसरा घर भेजे उपहार/ १५ अगस्त मनल जा हे धूमधाम में/ लगे हे चौपाल आज भी हमर गांव में' का दर्शकों ने हाथ-खोल कर स्वागत किया।

भोजपुरी में अपनी रचना पढ़ती हुईं कवयित्री डा पूनम आनंद ने कहा कि 'पनरह अगस्त सैंतालिस के दिनवा, सपनवा भइल साकार हो/ लहराए लागल आपन तिरंगा, धरती आऊर आकाश हो!' युवा कवि एवं पत्रकार चंदन द्विवेदी ने भी अपनी इन पंक्तियों से श्रोताओं पर गहर असर डाला कि 'हृदय जब अल्पमत में था तो बहुमत बन गई कविता/ समर में कारगिल में अटल बनकर धान गई कविता/ लिखा इतिहास में है आज भी सब जानते हैं कि धनानंद सामने चाणक्य बनकर तं गई कविता!' मैथिली की कवयित्री स्वयंप्रभा झा, अंगिका के कवि त्रिलोकी नाथ दिवाकर, शायरा श्वेता गजल तथा कुमार अनुपम ने भी अपनी रचनाओं से दर्शकों का मन रंजित किया।

अपने अध्यक्षीय काव्य-पाठ में डा. सुलभ ने अपनी इस गजल को देश के बलिदानियों को समर्पित करते हुए सस्वर पढ़ा कि 'ऐ दिल तु उनसे जाकर मेरा सलाम कहना/उनको ही पेशे-खिदमत है मेरा कलाम कहना/ जो खद के लिए जिए, वो इंसान क्या जिया/ जो देश पर मिटे उसे सौ-सौ सलाम कहना'। उन्होंने अपने गीत 'हम मंजता के प्रतिमान/ आदि सभ्यता हमारी है/ कोई भूखण्ड नहीं अपना/ समस्त वसुधा हमारी है!' के माध्यम से भारत की गौरव-गाथा और वसुधैव-कुटुम्बकम की महान अवधारणा को स्वर दिया।

इसके पूर्व, कवि-सम्मेलन का शुभारंभ आकाशवाणी, पटना के केंद्र अधीक्षक वेद प्रकाश ने किया। उन्होंने सभी कवियों और कवयित्रियों का, वंदन-वस्त्र और पुष्प-गुच्छ प्रदान कर अभिनन्दन किया। अतिथियों का स्वागत दूरदर्शन, बिहार के कार्यक्रम प्रमुख डा राज कुमार नाहर ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन आकाशवाणी, पटना के कार्यक्रम अधिशासी अनिल कुमार तिवारी ने किया। मंच का संचालन आकाशवाणी-दूरदर्शन की उद्घोषिका अनुपमा सिंह ने किया।

इस अवसर पर सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा कल्याणी कुसुम सिंह, वरिष्ठ कवि बच्चा ठाकुर, डॉ पुष्पा जमुआर, शमा कौसर, मंजू प्रकाश, सुनील कुमार उपाध्याय, ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश', जय प्रकाश पुजारी, डा. अमनोज गोवर्द्धनपुरी, अनिल कुमार, डा. सीमा यादव, शुभ चंद्र सिन्हा, रेखा भारती, डौली बगड़िया, सागरिका राय, डा. शालिनी पाण्डेय, डा. विद्या रानी, कमल प्रसाद 'कमल', डा. कुंदन लोहानी, अर्जुन प्रसाद सिंह, नेहाल कुमार सिंह 'निर्मल' आदि सैकड़ों की संख्या में कविगण और सुधी श्रोता उपस्थित थे।

कांवरियों की सेवा में चास रोटरी ने बढ़ाए अपने कदम

संवाददाता

बोकारो : रोटरी क्लब, चास की ओर से सोमवार को चास के गुरुद्वारा रोड में कांवरिया सेवा शिविर लगाया गया, जहां चिरका धाम जाने वाले कांवरियों की सेवा में रोटरी के कार्यकर्ता तैनात रहे। इस अवसर पर चास रोटरी की अध्यक्ष पूजा बैद ने कहा कि हजारों कांवरिया दामोदर से जल भरकर लगभग 35 किलोमीटर की दूरी तय करके चिड़का धाम पहुंचते हैं। रास्ते में इन कांवरियों की सेवा करना बेहद पुण्य का काम है। शिविर के संयोजक कमल तनेजा ने कहा कि यह शिविर कांवरियों की सेवा करने के लिए समर्पित है। कमल ने कहा कि यह सेवा कार्य पूरे सावन मास हर रविवार को शिविर लगाकर सेवा किया गया और अंतिम रविवार तक सेवा दी जाएगी।

चास रोटरी के संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने कहा कि ऐसे आयोजन से सौहार्द का वातावरण उत्पन्न होता है। चास रोटरी की सचिव डिंपल कौर ने कहा कि चास रोटरी ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए शिविर का आयोजन कर रहा है। डिंपल ने बताया कि शिविर में कांवरियों के लिए गर्म पानी, चाय - बिस्किट एवं दवा की व्यवस्था की गई। इस दौरान कांवरियों का रेला बोल बम के जयकारे के साथ गुजरते रहा और माहौल भक्तिमय बना रहा। इस अवसर पर अशोक तनेजा, बिनोद चोपड़ा, शिवानी तनेजा, नरेंद्र सिंह, डॉ श्रवण, माधुरी सिंह, कुमार अमरदीप, राजेश केडिया, मुकेश अग्रवाल, अमन मल्लिक, मनोज सिंह, अर्चना सिंह, शुभम कुमार, पूनम अग्रवाल, किरण कुमार, विनय सिंह, मुकेश अग्रवाल, मंजीत सिंह, हरबंस सिंह, चनप्रीत सिंह, डॉ पुष्पा, गौरव सिंह, ममता सिंह, मनप्रीत कौर, सुमी कौर ने शिविर को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

चलचित्र के जरिए रेलवे ने याद दिलाई विभाजन विभीषिका की काली स्मृतियां

संवाददाता

बोकारो : भारत सरकार के निर्देशानुसार दक्षिण-पूर्व रेलवे के आद्रा मंडल अंतर्गत बोकारो स्टील सिटी सहित अन्य रेलवे स्टेशनों पर देश के विभाजन की याद में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान भारत-पाकिस्तान के विभाजन से प्रभावित लोगों की पीड़ा को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से आद्रा मंडल के चार प्रमुख स्टेशनों, आद्रा, बांकुड़ा, पुरुलिया और बोकारो स्टील सिटी स्टेशनों में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके तहत प्रदर्शनी के साथ ही कई कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। इस दौरान विभाजन-भयावहता की तस्वीरें स्टेशनों पर बैनर एवं चलचित्र के माध्यम से प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी की शुरूआत में एक संक्षिप्त समारोह हुआ, जहां स्वतंत्रता सेनानियों, उनके परिवार के सदस्यों एवं प्रमुख वरिष्ठ नागरिकों को प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया गया। उद्घाटन समारोह के दौरान देशभक्ति के गीत बजाए एवं गाए गए। इस समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

बोकारो विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों सहित
समस्त देशवासियों को मेरी ओर से
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

देव शर्मा
प्रदेश महासचिव
युवा कांग्रेस, झारखंड
-सह-
केन्द्रीय अध्यक्ष
युवा लायंस फोर्स।

समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

एक शुभचिंतक
सेक्टर-4, बोकारो इस्पात नगर।

समस्त झारखंडवासियों को 76वें
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें!

बी. एल. पासवान
प्रदेश अध्यक्ष (पुलिस यूनिट)
ऑल इंडिया एससी-एसटी ओबीसी
माइनॉरिटी को-ऑर्डिनेशन
काउंसिल (झारखंड)।

सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की अशेष शुभकामनाएं

शुभचिंतक
चास-चंदनकियारी रोड, बोकारो।

चास-बोकारो के
निवासियों सहित समस्त
भारतवासियों को 76वें
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक
शुभकामनाएं!

योगेंद्र कुमार
चौधरी
अध्यक्ष
धर्म जन-जागरण समिति।

बोकारोवासियों सहित सभी देशवासियों
को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं!

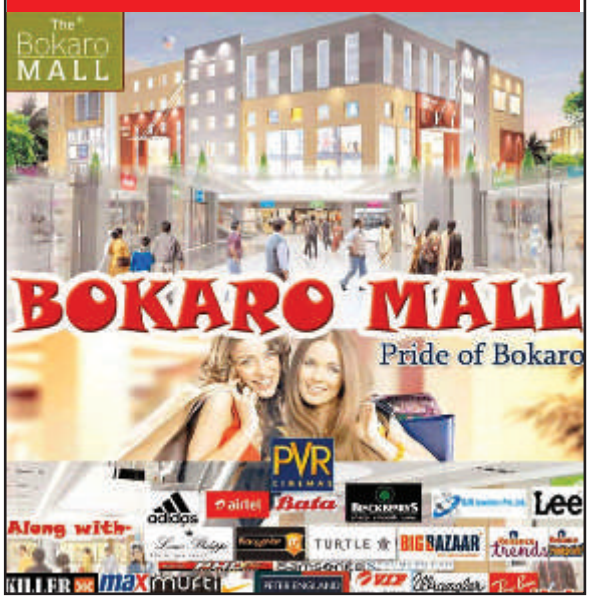

बेरमो, बोकारो और झारखंड सहित समस्त
देशवासियों को मेरी ओर से
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

मदन मोहन अग्रवाल
वरीय नेता, झामुमो
पूर्व अध्यक्ष, वन विकास निगम, बिहार-झारखंड।

समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

एक शुभचिंतक
सेक्टर-5, बोकारो।

स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।

गंगेश पाठक
प्रेस सचिव
अखिल भारतीय साहित्य परिषद।

भारी पड़ी पटना प्रशासन की दबंगई, अखबार का दफ्तर ढ़ाहने वाले अफसरों पर प्राथमिकी

हाईकोर्ट का जजमेंट आने से पहले ही छुट्टी के दिन की एकतरफा कार्रवाई, अदालत की अवमानना का केस दर्ज

रविवार को लगी ऐतिहासिक अदालत अफसरों को लगाई गई कड़ी फटकार

इधर, इस मामले में जब रविवार को स्पेशल कोर्ट चली और पटना नगर निगम के अधिकारियों की मनमानी सामने सामने आई, तो प्रशासन की तमाम दबंगई भारी पड़ गई। अवैध तरीके से कार्यालय तोड़ने के मामले में रविवार को छुट्टी के दिन ऐतिहासिक अदालत लगी और चीफ जस्टिस के. विनोद चन्द्रन और जस्टिस पार्थ सारथी की बेंच ने लगातार चार घंटे तक मैराथन सुनवाई की और नगर निगम के आयुक्त अनिमेष कुमार पराशर, अपर नगर आयुक्त शीला ईरानी, कार्यपालक अधिकारी प्रभात रंजन, निगम के कार्यपालक अभियंता विजय कुमार तथा पटना स्मार्ट सिटी के प्रोजेक्ट डायरेक्टर मो. शमशाद पर न्यायालय की अवमानना का मुकदमा दर्ज करने का आदेश जारी किया। इसे लेकर निगम के अफसरों व कर्मियों में हड़कंप की स्थिति बन गई है और चर्चा का बाजार भी गर्म हो चुका है।

विशेष संवाददाता

पटना : शनिवार का दिन पटना प्रशासन के लिए दबंगई के रूप में एक काले अध्याय के रूप में याद किया जाएगा। प्रशासन ने न्यायालय में मामला विचाराधीन होने तथा स्टेटस होने के बाद भी मुंशी प्रेमचंद के 97 वर्ष पुराने हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र 'चाणक्य' के कार्यालय को बुलडोजर लगवाकर तोड़ दिया। हाईकोर्ट द्वारा स्टेटस-को देने के बावजूद भवन को तोड़े जाने की कार्रवाई निंदा का विषय बनी हुई है। छुट्टी के दिन इस संबंध में रजिस्ट्रार जनरल के माध्यम से मुख्य न्यायाधीश से अपील की गई। लीव पिटिशन अपील (एलपीए) केस नंबर 528/22 मुख्य न्यायाधीश के कोर्ट में मामला विचाराधीन है।

इसके बाद भी प्रशासन ने एकतरफा कार्रवाई करते हुए दबंगई दिखाकर देश के सबसे पुराने हिन्दी साप्ताहिक अखबार 'चाणक्य' के दफ्तर को बुलडोजर से ध्वस्त करवा दिया। पटना के बुद्ध मार्ग में जीपीओ के सामने 1951 से अवस्थित था। ज्ञातव्य है कि इस संबंध में अखबार की प्रधान संपादक शैलजा बाजपेयी ने पूर्व में ही इस भवन पर हाईकोर्ट से स्टेटस-को ले रखा था। बाद में हाईकोर्ट के जज सत्यव्रत वर्मा की डबल बेंच द्वारा भी मामले को यथास्थिति में बनाए रखा गया था। इस बीच शुक्रवार, 11 अगस्त 2023 को चीफ जस्टिस की बेंच में इस पर डेढ़ घंटे सुनवाई चली तथा जजमेंट को रिजर्व कर लिया गया। फैसला आने के पूर्व ही शनिवार सुबह लगभग 10 बजे प्रशासन ने यह तोड़फोड़ अचानक शुरू कर दी।

पटना नगर निगम के नूतन राजधानी अंचल के दंडाधिकारी प्रभात रंजन ने दल-बल के साथ पहुंचकर यह कार्रवाई की। उन्हें कोर्ट के कागजात दिखाए गए, लाख उनसे आग्रह किया गया, लेकिन उन्होंने एक न मानी और कार्यालय तोड़वा दिया। इस संबंध में जिलाधिकारी तथा पटना नगर निगम के आयुक्त से भी यह अपील की गई कि क्योंकि, मामला कोर्ट में विचाराधीन है और जजमेंट आना बाकी है, अतः कोर्ट का आदेश आने तक यह कार्रवाई रोकी जाय, परंतु किसी ने न सुनी। मजिस्ट्रेट प्रभात ने कहा कि उनके आकाओं ने जजमेंट आने से पूर्व ही ऑफिस तोड़ने का निर्देश दिया है। 12 मई 2019 को भी इस भवन को बिना कोर्ट के नोटिस के आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त किया गया था।

हौसला... क्रिकेट में अब जौहर दिखाएंगे दिव्यांग

झारखंड दिव्यांग क्रिकेट टीम का चयन

विशेष संवाददाता

रामगढ़ : शारीरिक अक्षमता को अपनी ताकत बनाकर झारखंड के दिव्यांग प्रतिभाशाली युवा क्रिकेट में अपने जौहर दिखाने जा रहे हैं। रामगढ़ छावनी परिषद रामगढ़ में स्पोर्ट्स एसोसिएशन फॉर द डिसेब्लड एवं दिव्यांग परिवर्तन फाउंडेशन के तत्वावधान में एकदिवसीय ट्रायल किया। इसमें झारखंड राज्य के कई जिलों के दिव्यांगों ने भाग लिया। इससे पूर्व बोर्ड के सचिव अतहर अली ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर शुभारंभ किया। अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया।

इस बाबत अतहर अली ने बताया कि झारखंड दिव्यांग क्रिकेट टीम आगामी अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में तमिलनाडु के कोयंबटूर में त्रिकोणीय सीरीज में भाग लेगी, जो आगामी 26 से लेकर 27 अगस्त तक होगा। इसमें झारखंड टीम शामिल होगी। चयनकर्ता के रूप में भारतीय दिव्यांग क्रिकेट टीम के कोच जितेंद्र कुमार एवं तथा झारखंड दिव्यांग क्रिकेट टीम के कोच कमरुल हसन मौजूद रहे। बेहतर प्रदर्शन के आधार पर चयनित टीम में बोकारो के राजेश कुमार कप्तान बनाए गए। इनके अलावा टीम में बबलू गोप (बोकारो), फागु करमाली (रांची), विनोद कुमार महतो (रामगढ़), शकुनी मुंडा (रामगढ़), राजेश कुमार (हजारीबाग), भरत कुमार (धनबाद), मुदस्सिर खान (जामताड़ा), भूपेश कुमार (लातेहार), मंगल मुंडा (रामगढ़), अजहर (गिरिडीह), सुनील कुमार (चतरा), प्रमोद कुमार (बोकारो), रंजन कुमार (सिमडेगा), संदीप करमाली (टीम मैनेजर), कमरुल हसन (टीम कोच), डॉ. लाल देव (टीम फिजियोथैरेपी) और अतहर अली (मेंटर) शामिल हैं।

लगातार बारिश से शहरी क्षेत्रों में जलजमाव से परेशानी

मिथिला डायरी

दरभंगा : दरभंगा में विगत कई दिनों से रुक-रुककर हो रही बारिश के कारण शहरी क्षेत्र में जलजमाव की समस्या विकट हो गई है। इससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है। दरभंगा-लहेरियासराय वीआईपी रोड समेत विभिन्न मोहल्लों में सड़कों पर दो फुट तक पानी जमा हो गया है। इससे लोगों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सड़क से गुजरते समय लोगों को यह अनुमान नहीं रहता है कि कहां पर गड्ढा है। इस वजह से खासकर वाहन चालकों को दुर्घटनाग्रस्त होने का अंदेशा भी रहता है। हर बार बारिश के बाद सड़कों पर जलजमाव से लोगों में नगर निगम के प्रति आक्रोश है। नगर निगम के अफसरों का कहना है कि जिन इलाकों में जलजमाव हुआ है, वहां दमकल से पानी निकाला जाएगा। इसके लिए जोन प्रभारियों को आवश्यक निर्देश दे दिए गए हैं। इधर, कमतौल थाना क्षेत्र की टेकटार पंचायत के सिरहुल्ली कोठिया घाट पर बना चचरी पुल शनिवार को अधवारा समूह की धौंस नदी के जलस्तर में हुई वृद्धि के कारण टूट गया। इसके कारण सिरहुल्ली, कोठिया, बिशंभरपुर, कुसुमपट्टी, मंगरथु, पंचमा, गंज सहित आसपास के कई गांवों की आवाजाही प्रभावित हो गई है।

नेपाली शराब की तस्करी पर शिकंजा

मधुबनी : नेपाली शराब की तस्करी पर स्थानीय पुलिस ने शिकंजा कसा है। गुप्त सूचना के आधार पर शुक्रवार को 3000 बोतल नेपाली शराब से भरी स्कॉर्पियों को पुलिस ने नरहिया गोठ के समीप पकड़ा। पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि नेपाल से शराब लेकर नरहिया में कुछ धंधेबाज द्वारा शराब का स्टॉक किया जा रहा है। धंधेबाज अपनी शराब से भरी स्कॉर्पियों को छोड़कर फरार हो गया। इस मामले में दोनों फरार धंधेबाज के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। बता दें कि पुलिस और एसएसबी द्वारा लगातार शराब धंधेबाजों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें धंधेबाज गिरफ्तार हो रहे है। बावजूद यह धंधा थमने का नाम नहीं ले रहा है। इधर, लौकहा पुलिस ने 24 बोतल बीयर के साथ सोलाडी के निकट दो धंधेबाज को पकड़ लिया। झंझारपुर में 124 लीटर नेपाली देशी शराब बरामद हुई। बासोपट्टी में 900 बोतल शराब व दो बाइक किया जब्त बासोपट्टी। बासोपट्टी थाना पुलिस ने कटैया से कड़वाही जाने वाली मुख्य सड़क से 900 बोतल शराब व दो बाइक जब्त की।

जनकपुर रोड रेलवे स्टेशन का प्लेटफॉर्म सुदृढ़ीकरण जोरों पर

पुपरी : जनकपुर रोड (पुपरी) रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म को ऊंचा करने सहित स्टेशन के विकास का काम इन दिनों जोर-शोर से चल रहा है। स्टेशन पर अन्य सुविधाएं बहाल करने की दिशा में कार्य जारी है। पुपरी नागरिक मंच ने इसे सराहते हुए कहा कि इससे यात्रियों को सहूलियत होगी।

पेज- एक का शेष

आजाद भारत की...

क्योंकि, आजादी के 75 वर्षों बाद भी हमारी न्याय व्यवस्था अंग्रेजों के बनाए कानून पर ही चलती रही है। सच कहें तो आजादी के अमृत महोत्सव काल में 76वें स्वतंत्रता दिवस के ठीक पूर्व केन्द्र सरकार का यह फैसला देशवासियों के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए एक नया संदेश है।

क्या होंगे नए बदलाव?

दरअसल, अंग्रेजों के बनाए तीन मूलभूत कानून अब खत्म होने जा रहे हैं। पहला अंग्रेजी संसद में 1860 में पारित किए गए इंडियन पीनल कोड (आईपीसी) की जगह अब भारतीय न्याय संहिता 2023, दूसरा 1898 में बने क्रिमिनल प्रोसीजर कोड (सीआरपीसी) की जगह अब भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और तीसरा 1872 में बने इंडियन एविडेंस एक्ट की जगह भारतीय साक्ष्य विधेयक 2023 स्थापित होगा।

गहन विचार-विमर्श के बाद आया कानून

दरअसल, केन्द्र सरकार ने इन कानूनों को लाने से पहले 18 राज्यों, 6 संघ शासित प्रदेशों, सुप्रीम कोर्ट, 16 हाई कोर्ट, 5 न्यायिक अकादमी, 22 विधि विश्वविद्यालय, 142 सांसद, लगभग 270 विधायकों और जनता से उनकी राय ली गई। चार वर्षों तक इस कानून पर गहन विचार-विमर्श हुआ और फिर उसे अमल में लाने का प्रस्ताव संसद में पेश किया गया है।

नागरिकों को न्याय दिलाने का प्रावधान

दरअसल, आजादी के समय से अंग्रेजों द्वारा बनाए गए जो कानून देश में लागू रहे, अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें केवल अपनी रक्षा और अपने हितों को ध्यान में रखकर बनाया था। उसमें हिन्दुस्तानियों को न्याय देने की जगह उन्हें दंडित किये जाने का प्रावधान था। जबकि, भारत सरकार ने देश के नागरिकों को संविधान में दिए गए अधिकारों की रक्षा तथा उन्हें दंड की जगह न्याय देने के लिए यह कानून लाया है। इन तीन कानूनों से हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में अब 533 धाराएं रहेंगी। जबकि, अब तक इसमें 478 धाराएं थीं। 160 धाराओं को बदल दिया गया है। 9 नई धाराएं जोड़ी गई हैं, जबकि 9 धाराओं को निरस्त किया गया है। इसी तरह भारतीय न्याय संहिता में पहले की 511 धाराओं की जगह अब 356 धाराएं होंगी। 175 धाराओं में बदलाव किया गया है। 8 नई धाराएं जोड़ी गई हैं और 22 धाराओं को निरस्त किया गया है। जबकि, भारतीय साक्ष्य विधेयक की जगह पहले की 167 के स्थान पर अब 170 धाराएं होंगी। इसमें 23 धाराओं में बदलाव किया है। 1 नई धारा जोड़ी गई है और 5 धाराएं निरस्त की गई हैं।

नए कानून में खास बदलाव

केन्द्र सरकार द्वारा लाये गए नए कानूनों में खास बदलाव किये गए हैं। एक तरफ राजद्रोह जैसे कानूनों को निरस्त किया गया है, दूसरी ओर धोखा देकर महिला का शोषण करने और मॉब लिंचिंग जैसे जघन्य अपराधों के लिए दंड का प्रावधान करने के साथ ही संगठित अपराधों और आतंकवाद पर नकेल कसने के लिए ठोस कदम उठाये गए हैं।

निर्दोष नागरिकों को राहत

इन नए कानून में दस्तावेजों की परिभाषा का विस्तार कर इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड्स, ई-मेल, सर्वर लॉग्स, कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, लैपटॉप्स, एसएमएस, वेबसाइट, लोकेशनल साक्ष्य, डिवाइस पर उपलब्ध मेल, मैसेजेस को कानूनी वैधता दी गई है। इस कानून में एफआईआर से केस डायरी, केस डायरी से चार्जशीट और चार्जशीट से जजमेंट तक की सारी प्रक्रिया को डिजिटलाइज करने का प्रावधान किया गया है। सर्च और जब्ती के समय वीडियोग्राफी को अनिवार्य कर दिया गया है, जो केस का हिस्सा होगी और इससे निर्दोष नागरिकों को फंसाया नहीं जा सकेगा। पुलिस द्वारा ऐसी रिकॉर्डिंग के बिना कोई भी चार्जशीट वैध नहीं होगी।

GURU GOBIND SINGH EDUCATIONAL SOCIETY'S TECHNICAL CAMPUS
COLLEGE OF ENGINEERING & MANAGEMENT
KANDRA, CHAS, BOKARO, JHARKHAND-827013
APPROVED BY AICTE & AFFILIATED TO JHARKHAND UNIVERSITY OF TECHNOLOGY (JUT), RANCHI

ADMISSION OPEN FOR SESSION 2023-24

B.TECH
- COMPUTER SCIENCE ENGG.
- CSE (DATA SCIENCE)
- CSE (CYBER SECURITY)
- FASHION TECHNOLOGY
- MECHANICAL ENGINEERING
- CIVIL ENGINEERING
- ELECTRICAL & ELECTRONICS ENGG.
- ELLECTRONICS & COMM. ENGG.

M.B.A
Finance HR Marketing
BBA & BCA

for BBA, Passed 10+2 examination with minimum 45% marks aggregate (40% for Reserved category) in any discipline (Science/Arts/Commerce)

No.1 Engineering, Management, Application & Fashion College of Jharkhand

SAT 2023

No Tuition Fees for e-kalyan eligible Students

- Flexible time table for employed Diploma holders for part-time B.Tech Lateral entry as a regular course.
- Excellent Placement Assistance

12 PASS ADMISSION ELIGIBILITY FOR B.Tech & BBA

Passed Diploma examination from an AICTE approved institution; with minimum 45% for Reserved category) in any branch of engineering/Technology
For BCA, Passed 10+2 examination with minimum 45% marks (40% for Reserved category) in any discipline (Science/Arts/Commerce) with Mathematics/Business Mathematics/ Computer Science/Information Practices/Information Technology/ Statistics as one of the subjects.
For MBA, recognized Bachelors Degree of minimum 3 years duration, obtained atleast 50% marks for Reserved category) in the qualifying examination.

GGSES TECHNICAL CAMPUS, KANDRA (Chas), Bokaro, Jharkhand-827013
Phone No.: 06542-265293, 7992284995, 7992415822, 9822732264

बेरमो, झारखंड सहित सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

अनिल अग्रवाल
प्रदेश अध्यक्ष
अग्रवाल कल्याण महासभा, झारखंड।

समस्त देशवासियों को
77वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक बधाई व
शुभकामनायें।

सरदार संतोष सिंह
उपाध्यक्ष
झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी
(अल्पसंख्यक विभाग)

समस्त देशवासियों
को स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं।

डॉ. प्रभाकर कुमार
बाल अधिकार कार्यकर्ता सह-
मनोवैज्ञानिक, बोकारो (झारखंड)।

76 वर्षों से विद्युत उत्पादन
के क्षेत्र में देश की अग्रणी संस्था

दामोदर घाटी निगम के बोकारो थर्मल प्रतिष्ठान की ओर से बोकारो थर्मल वासियों, डीवीसी परिवार सहित सभी देश वासियों को आजादी का अमृत महोत्सव 76 वें स्वतंत्रता दिवस पर ढ़ेर सारी बधाई एवं

हार्दिक शुभकामनाएं

नन्द किशोर चौधरी
मुख्य महाप्रबंधक व परियोजना प्रधान
डीवीसी बोकारो थर्मल पावर प्लांट, बोकारो।

"हमसे है लाखों चेहरों की मुस्कान"

77वें स्वतंत्रता दिवस की
ढेरों बधाई एवं
शुभकामनाएं

कुमार अमित
सदस्य
भाजपा प्रदेश कार्यसमिति
झारखंड।

देशवासियों को मेरी ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक
शुभकामनाएं!

संदीप अनुराग टोपनो
अंचलाधिकारी, गोमिया।

कार्यालय जिला परिषद, बोकारो
(शुभकामना संदेश)

15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) 2023 के शुभ अवसर पर अध्यक्ष/उप विकास आयुक्त-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी एवं जिला परिषद, बोकारो परिवार की ओर से राज्य एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

कीर्ति श्री जी.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,
जिला परिषद, बोकारो।

सुनीता देवी
अध्यक्ष
जिला परिषद, बोकारो।

दामोदर घाटी निगम
चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र
चंद्रपुरा, बोकारो।

राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित
दामोदर घाटी निगम

चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र की ओर से
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक
शुभकामनाएं।

"हमसे है लाखों चेहरों पर मुस्कान"

आजसू पार्टी

स्वतंत्रता दिवस

के शुभ अवसर पर समस्त झारखंडवासियों
को मेरी ओर से
हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएं।

www.lambodarmahto.com LMahtoGomia LMahtoGomia

डॉ लम्बोदर महतो
विधायक, गोमिया

निवारण हो दु:खों का, जागरण हो सुखों का

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली -

दुःख से मुक्ति और सुख की अनुभूति समान लगने वाले अनुभव होने के बाद भी अलग है। यह प्रचलित आम मान्यता और विचार है कि मन बहलाव, मनोरंजन, इच्छाओं की पूर्ति से हमें स्थायी सुख मिलेगा। दुःख से हम सारी जिन्दगी भागते रहते हैं, इसी जद्दोजहद में एक दिन जिन्दगी से चल देते हैं। मूल प्रश्न है दुःख का निवारण कैसे किया जाए? आओ, मंथन करते हैं, इस प्रश्न का उत्तर भी मंथन करने से ही प्राप्त होगा।

जितनी पुरानी हमारी मानवता है, उतना ही हमारा दुःख के साथ संघर्ष है। विचारणीय बात यह है कि इस संघर्ष में हमेशा दुःख जीत गया है। बेशक कुछ समय के लिए हर्ष-उल्लास के क्षण दुःखों को ढ़ंक देते हैं, मगर फिर रोजमर्रा के जीवन के कष्ट दुःखों को पुनर्जीवित कर देते हैं।

आखिर गलती कहां कर रहे हैं हम कि दुःखों से बार-बार परास्त हो जाते हैं? क्या दुःखों का स्थाई निदान संभव नहीं? संभव तो है, मगर पहले यह जाना जाय कि दुःखों का निवारण करने के लिए हमारे समाज में प्रचलित अस्थाई तरीके कौन से हैं?

हां, ज्यादातर लोग दुःख निवारण के अस्थायी उपाय ही ढूंढ़ रहे हैं। देखा जाय तो मोटी-मोटी दो रास्ते हैं- पहला भोग का, जिसे सांसारिक पद्धति कहा गया है। इसी रास्ते का दूसरा नाम कामना पथ है, जिस पर चलकर इच्छाओं के कई पड़ाव हमारे जीवन में आते हैं। इन्हें पूरा करके कुछ देर के लिए खुशी मिलती है, परन्तु फिर वही तनाव, परेशानी और दुःख।

दूसरा मार्ग त्याग का है। इस मार्ग की वकालत करते हुए कई साधु-संन्यासी मिलेंगे, जिन्होंने इस सांसारिक जीवन को दुःखद माना और संन्यास पथ को चुना। उनका सिद्धान्त था कि इच्छाओं का कुआं अनन्त है। इसे भर नहीं सकते हैं, इसलिए इच्छाओं को छोड़ देना चाहिए।

अधिकांश मानवता पहले वर्ग में आती है। अतएव, विश्लेषण किया जाय कि सामान, बंधन या सैर-सपाटे में सुखों की गारंटी है या नहीं?

अपने जीवन में ही देख लीजिए, जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए हम बेचैन रहते थे, उनके पूर्ण होने पर हुई सुखानुभूति लम्बे समय तक नहीं रहती है। बहुत जल्द ही उन वस्तुओं एवं अनुभवों से ऊबने लगते हैं और फिर हमें एक नये लक्ष्य की तलाश होती है, एक नई कामना जन्म लेती है, जिसकी पूर्ति हमें सुख प्रदान करेगी।

ये तो हुई वस्तुओं एवं इच्छाओं को लेकर सुख-दुःख के बीच चल रहा संघर्ष, सम्बन्धों के साथ भी सुख का रिश्ता कुछ खास सहज नहीं है। विश्वास करना मुश्किल लगता है? उस नव-दम्पत्ति की ओर देखें, जिसे एक-दूसरे के सानिध्य में असीम सुख मिलता है, विवाह के दस-बारह वर्षों के बाद हो सकता है इनके बीच मनमुटाव होने लगे या फिर ये एक-दूसरे के साथ उतना समय व्यतीत नहीं करें, जितना सम्बन्ध शुरूआत में करते थे। अब उन्हें वही सुख शायद बच्चे के उत्तम रिजल्ट को देखकर आये। अर्थात समय के साथ सुखों को अनुभव करने का हमारा मापदंड बदलता है।

बीते हुए सुखद क्षणों के प्रति हमारी आसक्ति या फिर किसी व्यक्ति से अत्यधिक प्रेम, दोनों ही बीते हुए सुख की डोर को सतत थामे रखने के तरीके हैं, परन्तु इन

तरीकों की बुनियाद में खोट है। आसक्ति ही दुःख का कारण है, चाहे वह व्यक्ति के प्रति हो या अनुभव के प्रति।

सम्बन्ध परिवर्तनशील है और इस सच को मान लेना सुख की शुरुआत है। मन के खालीपन को भरने के लिए हमें उसे टटोलना, समझना पड़ेगा। अनुभवों के प्रति सतर्क एवं सजग होना पड़ेगा।

मगर सबसे पहले स्वयं से परिचय, बिना किसी पर्त्त के। आखिर आप कौन हैं? क्या उपयोगिता है हमारे जीवन की? आप नाम, बैंक खाता, व्यवसाय, हुनर जैसे तमाम पर्त्त छीलकर देखिये, आप खुद को बेहद निरीह पाएंगे। दुखी भी! उस सुख की प्रतीक्षा में, जो रोज आने का वादा तो करता है, मगर आता नहीं है।

सुख को स्थायी करने के लिए उसकी प्रतीक्षा बंद करें और उसे छवियों से, यानी विगत की यादों से मुक्त करें, क्योंकि कुछ मिल जाने पर सुख स्थायी होता नहीं है और जो बीत गया, वहां खड़े होकर क्या मिलेगा? समय की वह धारा बीत गई, उसमें नहीं रहें।

मन के अन्दर खालीपन को भरना मानवीय गुणों से सम्भव है। भोग और त्याग के ज्ञात मार्गों से अलग संवेदनाओं का मार्ग है, जहां अपने से अधिक दूसरों का सुख महत्वपूर्ण है। इसका एक तीसरा सिद्धान्त भी है, जिसका समर्थन करने वाले लोगों ने किसी खास प्रयोजन हेतु, जैसे- समाजसेवा, पर्यावरण रक्षा, जीव-जन्तुओं के हितार्थ कार्य करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है। उनसे पूछिये कि ऐसा करके उन्हें क्या मिलता है, तो वे कहेंगे- प्रसन्नता।

इस कार्य को वे उत्कटता और सम्पूर्ण भाव से करते हैं। रूमानी अहसासों से परे जब हम अपने जीवन में देश और समाज की बेहतरी के लिए किसी खास सिद्धान्त, किसी क्रिया के प्रति समर्पित होते हैं तो सुखों को हमें ढूंढ़ना नहीं पड़ा है, वरन वे हमें खोज लेते हैं।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

कई रोगों की फायदेमंद औषधि है पान

ताम्बूल अर्थात पान पूजा-पाठ, पर्व-त्योहार, उपनयन, विवाह, भोज, सभी में उपयोग किया जाता है। भोजन के उपरांत मुंह का स्वाद बनाने में पान अत्यंत प्रभावी माना जाता है। लेकिन, कई बीमारियों के उपचार में इसके गुणकारी फायदें हैं, जिन्हें जानना लाभप्रद है। आइए जानते हैं-

सर्दी- खांसी - पान के पत्ते पर सरसों का तेल लगाकर इसे गर्म करने के बाद, ग्रसित व्यक्ति की छाती पर रखने से सर्दी खांसी में काफी राहत मिल सकती है।

ब्लड शुगर - शुगर जैसी महत्वपूर्ण बीमारियों में भी पान के पत्तों की सकारात्मक भूमिका होती है। दरअसल पान की पत्तियां हाई ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित कर सकती हैं। पान की पत्तियों का अर्क नियमित रूप से लें, तो इसमें मौजूद एंटी डायबिटिक गुण आपके ब्लड शुगर के लेवल को कम कर सकते हैं।

मूत्रवर्धक - पान की पत्तियों को पीसकर उसे निकाला हुआ रस और इसमें थोड़ा पतला दूध मिलाकर सेवन करने से शरीर में पानी की अवधारण क्षमता में सुधार आता है। ऐसा करने से पेशाब की समस्या से पीड़ित व्यक्तियों को काफी राहत मिलती है।

भूख बढ़ाने - भूख से संबंधित समस्याओं या पेट खराब होने की स्थिति में पान के पत्ते के फायदे भी देखे जाते हैं। दरअसल, पान के पत्ते भूख लगने वाले हार्मोन को ट्रिगर कर करने में सक्षम होते हैं, जिससे कि आपकी भूख न लगने की समस्या दूर होती है। साथ ही पान के पत्ते आपके पेट से तमाम विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालकर आपकी भूख बढ़ाने में मदद करते हैं। पाचन भी दुरुस्त करता है।

गैस की समस्या - पान के पत्ते नियमित सेवन करने से एसिडिटी की समस्या में राहत मिलती है, जिससे कि आपकी गैस्ट्रिक की समस्या काफी हद तक दूर हो जाती है।

घाव का उपचार- कटने, छिलने आदि घाव पर पान की पत्तियों का रस निकालकर लगाने से घाव में संक्रमण नहीं होता है, क्योंकि पान के पत्तों में घाव और संक्रमण को दूर करने के गुण पाए जाते हैं। इसे प्रभावित क्षेत्रों में लगाकर इसे किसी कपड़े से बांधने से यह विनाशकारी रोगाणुओं के विकास को भी बाधित करता है।

मुहांसे - पान के पत्ते में रोगाणुरोधी गुण पाए जाते हैं। इस वजह से पान के पत्ते मुहांसे, ब्लैक स्पॉट, खुजली, एलर्जी आदि समस्याओं का इलाज करने में सक्षम होते हैं।

मुंह की समस्या व मसूड़ों के लिए - पान के पत्ते चबाने से आपका मुंह साफ होता है, मसूड़ों को भी मजबूती मिलती है। पान के पत्ते अक्सर मुंह में होने वाले रक्त स्राव को भी रोक सकते हैं।

बालों के लिए- बालों से जुड़ी समस्याओं की बात करें तो पान के पत्ते का उपयोग बालों के झड़ने से संबंधित मुद्दों के लिए किया जाता है। इसके लिए आपको पान के पत्ते को पीसकर इसे नारियल तेल के साथ मिलाकर पेस्ट बनाना होगा, फिर इसे अपने स्कैल्प पर लगाया जा सकता है।

कब्ज - पान की पत्तियों को मैश कर लें और रातभर के लिए पानी में रखें। अगली सुबह इसी पानी का सेवन करने से कब्ज से राहत मिलती है।

प्रस्तुति : विकास।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

अलका रानी
सीडीपीओ
गोमिया।

समस्त भारत वासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं।

अलख निरंजन तिवारी
वन क्षेत्र पदाधिकारी, गोमिया।

समस्त भारत वासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं।

जुबैदा खातून
मुखिया, लोधी पंचायत (गोमिया)।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

अभिषेक महतो
थाना प्रभारी
आईईएल, गोमिया।

सभी देशवासियों को 77वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।

हाजी अब्दुल कादिर भाटी
मुस्लिम एदारे सरपरस्त - सह- समाजसेवी, गोमिया।

समस्त भारत वासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं।

राजेश रंजन
थाना प्रभारी, गोमिया।

झारखण्ड पुलिस
बोकारो जिला
आवश्यक सूचना

एक करोड़ (1,00,00,000) वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

मिसिर बेसरा उर्फ भास्कर उर्फ सुनिर्मल जी उर्फ सागर पे0–दर्पण मांझी
सा0–मदनडीह
थाना–पीरटांड़
जिला–गिरिडीह
(PBM)

प्रयाग मांझी उर्फ विवेक उर्फ फूच्चु उर्फ करण दा उर्फ लेटरा,
पे0–स्व0 चरकु मुर्मू,
ग्राम–दल्लुबुद्धा,
थाना–टूण्डी,
जिला–धनबाद।
(CCM)

अनल दा उर्फ तुफान दा उर्फ पतिराम माँझी उर्फ पतिराम
मराण्डी उर्फ रमेश
पे0–टोटो मराण्डी उर्फ तारू
माँझी, सा0–झरहावाले,
थाना–पीरटाँड़ जिला–गिरीडीह
(CCM)

पच्चीस लाख (25,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

रघुनाथ हेम्ब्रम उर्फ निर्भय जी उर्फ बिरसेन उर्फ काना,
पे0–बिशु हेम्ब्रम,
ग्राम–जरीडीह,
थाना–डूमरी,
जिला–गिरीडीह
(SAC)

अजय महतो उर्फ टाईगर उर्फ मोछु उर्फ श्रीकान्त उर्फ अंजन
पे0–प्रेमचंद्र महतो
ग्राम–नावाडीह, थाना–पीरटाँड़,
जिला–गिरीडीह
(SAC)

प्रकाश महतो उर्फ अतुल उर्फ पिन्टु महतो पे0–केशव महतो
सा0–अमन बस्ती
थाना–गोमिया
जिला– बोकारो।
(SAC)

पन्द्रह लाख (15,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

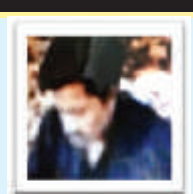

संतोष महतो उर्फ संजय उर्फ बासुदेव महतो उर्फ बसवा,
पे0–स्व0 माधो महतो उर्फ लोधा महतो, ग्राम–गम्हारा,
थाना–पीरटाँड़,
जिला–गिरीडीह
(RCM)

रणविजय महतो उर्फ रंजय उर्फ नेपाल महतो, पे0–हुबलाल महतो, ग्राम–बेहराटांड़ (नर्रा) थाना–चन्द्रपुरा,
जिला–बोकारो।
(RCM)

दो लाख (2,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

कुँवर माँझी उर्फ सहदेव माँझी उर्फ सादे, पे0–करमा मांझी,
ग्राम–बिरहोरडेरा, थाना–महुआटाँड़,
जिला–बोकारो।
(AC)

एक लाख (1,00,000) लाख वांछित ईनामी नक्सली का नाम एवं फोटो

ब्रजेश मांझी उर्फ बेगुला
पे0–गेजुआ उर्फ गगरा,
ग्राम–डंडरा,
थाना – गोमिया (चतरोचट्टी)
जिला– बोकारो।
(LGS)

बिरसा मांझी
पे0–स्व0 बुधू मांझी
सा0–चोरपनिया,
थाना– जगेश्वर बिहार,
जिला– बोकारो।
(LGS)

77वां वर्ष - महापरिवर्तन का संकेत

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण -

15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजी दासता से मुक्त हुआ, आजाद हुआ। 2023 में भारत अपनी आजादी के 76 वर्ष पूरे करके 77वें वर्ष में प्रवेश करेगा। हर आने वाला वर्ष एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होता है। क्या है इस वर्ष के गर्भ में, इसे जानेंगे भारतवर्ष की कुंडली से चलने वाली दशा के साथ-साथ वर्षफल कुंडली से। वर्षफल जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, एक वर्ष में घटने वाली घटनाओं की जानकारी देता है।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से यह वर्ष एक अद्भुत संयोग का वर्ष है। इस वर्ष आजादी महोत्सव के समय श्रावण अधिक मास रहेगा और वर्ष 1947 में जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी, तब भी श्रावण अधिक मास बीत रहा था। इस वर्ष भारत की कुंडली का लग्नेश शुक्र वक्री होकर अभी-अभी सिंह राशि से कर्क राशि में आया है। नवमेश एवं दशमेश शनि, शतभिषा नक्षत्र में वक्री चल रहा है। द्वितीयेश बुध 24 अगस्त को पुनः सिंह राशि में वक्री होगा, जहां वह 15 सितंबर तक रहेगा। दिसंबर माह में एक बार फिर से धनु राशि में बुध वक्रत्व को प्राप्त करेगा। गुरु मेष राशि में 5 सितम्बर को वक्री होगा। राहु केतु हर वक्त वक्री ही रहते हैं। ये दोनों भी अक्टूबर माह में मेष और मीन राशि गण्डान्त में रहेंगे।

चंद्र/शुक्र की दशा में ग्रहों की तेजी से परिवर्तित होती गति एवं वक्री होकर पृथ्वी से उनकी बढ़ती नजदीकी, मानो ग्रहों ने सामूहिक रूप से देश ही नहीं, दुनिया को बदलने की ठानी है। महापरिवर्तन की शुरुआत एवं राजनैतिक उथल-पुथल का मंच शुक्र ने कर्क राशि में आकर तैयार कर दिया है। इसके मंचन में तेजी हमलोग अक्टूबर, नवंबर माह से देखना आरंभ करेंगे।

ग्रहों के वक्री होने के क्रम में ध्यान देने योग्य बात यह है कि शनि को छोड़कर अन्य सभी ग्रह धर्म राशि, अग्नि तत्व राशि में वक्री हो रहे हैं। साथ ही साथ, 2023 को जोड़ें - 2+0+2+3 तो 7 अंक प्राप्त होगा, जो कि केतु का अंक है। फिर से अग्नि की प्रधानता।

अग्नि तत्व का उभरकर आना विकास एवं विनाश दोनों का सूचक है। अच्छी बात यह है कि धर्म का सहारा है। कह सकते हैं कि यह वर्ष 'धर्मो रक्षति रक्षितः' को चरितार्थ करने वाला वर्ष होगा। आधुनिकता के अंध दौर में थोड़ा ठहरकर आत्मावलोकन का वर्ष होगा। अपने संस्कारों से जुड़कर मूल की ओर लौटने का वर्ष होगा। संयमित और अनुशासित होकर दृढसंकल्प से विश्व को अपनी नीतियों से चकित करने वाला वर्ष होगा।

गुरु का भरणी नक्षत्र में वक्री होना एवं शनि का इस वर्ष तीन नक्षत्रों, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्व भाद्रपद से संचार करते हुए वृश्चिक, धनु एवं मकर नवांश से गुजरना निश्चित ही एक बड़े बदलाव के सूत्रपात का संकेत दे रहे हैं। वर्षफल 2023-2024 की कुंडली के अनुसार तुला लग्न उदित हो रहा है। अर्थात स्वतंत्र भारत की कुंडली का छठा भाव इस वर्ष का लग्न बन रहा है। लग्नेश शुक्र दशम भाव में वक्री होकर दशमेश चंद्र और एकादशेश सूर्य के साथ युत हैं। लग्न भाव पर षष्ठेश गुरु की सप्तम भाव से दृष्टि है। लग्न भाव पर राहु की भी दृष्टि है।

वर्षफल की कुंडली से प्रथम दृष्टया यह संकेत है- इस वर्ष चुनाव और सीमा सुरक्षा (छठा भाव), आंतरिक कलह (लग्न पर राहु की पूर्ण दृष्टि), प्रमुख विषय रहेंगे।

भारत की कुंडली का लग्नेश एवं वर्षफल की कुंडली का लग्नेश शुक्र का दशम भाव में शत्रु राशि में होकर शत्रु के साथ होना यह संकेत दे रहा है कि सरकार के लिए देश के कई आंतरिक मुद्दों का निपटारा करना आसान नहीं होगा। यह अच्छी बात है कि इस योग पर अन्य कोई अशुभ प्रभाव नहीं है। मतलब कि सरकार असहज होते भी कठोर निर्णय लेने में सफल हो पायेगी। शुक्र,चंद्र का संयोग, अपने सहयोगियों को एक रख पाने की जद्दोजहद बनेगी।

मुंथा- वर्षफल कुंडली के बारहवें भाव, कन्या राशि में है। मुंथा का राश्याधिपति बुध एकादश भाव में केंद्र के स्वामी मंगल के साथ है और त्रिकोण के स्वामी वक्री शनि से दृष्ट है। तृतीयेश और षष्ठेश गुरु से दृष्ट है।

बारहवें भाव में मुंथा का होना और मुंथेश का एकादश भाव में होकर सप्तम भाव से गुरु से दृष्ट होना- वैश्विक पटल पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में ऐसे भारत के अभ्युदय का संकेत है, जो विश्व को अपनी बात अपनी शर्तों पर मनवाने में सक्षम हो पायेगा।

मुंथेश का अग्नि तत्व राशि में अग्नि तत्व ग्रह मंगल के साथ होना एवं मंगल का द्वितीयेश होना - वित्त के क्षेत्र में, भारतीय कर्ज नीति में, बैंकिंग सेक्टर, न्यायपालिका, शिक्षा में - आमूल-चूल परिवर्तन इस वर्ष के मुख्य एजेंडा में शामिल होगा।

षष्ठेश मंगल का साथ एवं चतुर्थ शनि की दृष्टि- देश की सीमा पर एवं देश के भीतर दुश्मनों से निपटने एवं स्थिति को स्थिर बनाये रखने की दिशा में नए और दृढ कानून बनाये जाने का संकेत मिल रहा है।

मंगल, शनि, बुध और शुक्र के साथ पंचम, एकादश, द्वादश, द्वितीय, सप्तम, द्वादश भाव के स्वामी का एक लय स्थापित करना - विदेशी सहयोग में वृद्धि, विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में प्रगति, निर्माण के क्षेत्र में (मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर) आशा के अनुरूप तो नहीं, पर नए-नए अवसर के द्वार जरूर खुलेंगे।

बुध का मंगल के साथ होकर वक्री शनि से दृष्ट होना, शुक्र का वक्री होना, गुरु का वक्रत्व की ओर अग्रसर होना और शनि का धरती के नजदीक होकर वक्री होकर इसकी गति में तेजी से परिवर्तन होना- आगे आने वाले समय में देश में और देश के उत्तर, उत्तर पश्चिम, पश्चिम एवं पूर्वी भाग में प्राकृतिक उत्पात, अत्यधिक बारिश की वजह से भू-स्खलन, भूकंप, चक्रवातीय तूफान को लेकर कुछ संवेदनशील समय की ओर इशारा कर रहे हैं, जिनमें से दिसंबर' 2023 तक का महत्वपूर्ण समय है- 31 अगस्त से 5 सितंबर, 15 से 25 अक्टूबर। शस्त्रपीड़ा, दुर्भिक्ष के साथ साथ देश के गांगेय प्रदेश में इस वर्ष सूखा प्रभावित क्षेत्र में वृद्धि होने का संकेत है।

1947 से लेकर अब तक भारत ने सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम' का पाठ पढ़ाने वाले देश भारत की तरफ आज सम्पूर्ण विश्व की नजर है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है। आज यह देश एक ऐसे महापरिवर्तन के द्वार पर है, जो परिवर्तन शताब्दियों में एक बार होता है।

आइये, स्वतंत्रता के इस पावन अवसर पर हम सब भी इस परिवर्तन के लिए अपनी अपनी सकारात्मक भूमिका तय करें!!

(लेखिका वरिष्ठ ज्योतिषविद एवं योग व आध्यात्मिक चिंतक हैं।)

राष्ट्रीय ध्वज - भारतीय अभिमान व गौरव का प्रतीक

किसी भी राष्ट्र का राष्ट्रीय ध्वज गौरव अभिमान का प्रतीक होता है। राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देता है। राष्ट्रीय ध्वज कहा जाने वाला कपड़े का यह टुकड़ा पूरे राष्ट्र उसकी गरिमा एवं प्रतिरूप का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे राष्ट्र को कोई एकता के सूत्र में बोध करा सकता है, तो वह हमारा राष्ट्रीय ध्वज ही है। राष्ट्र के राष्ट्रीय त्योहारों पर सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय ध्वज को फहराया जाता है। ध्वज का सम्मान हमारे लिए देशभक्ति का प्रतीक है। यह राष्ट्र का ही नहीं, बल्कि राष्ट्र में रहने वाले नागरिकों के आदर्शों का भी सूचक है। किसी राष्ट्र का ध्वज उसके स्वतंत्रता व राष्ट्रीय गौरव एवं राष्ट्रीय निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक भी है। ध्वज से लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगती है और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के बारे में जागरूकता को बढ़ावा मिलता है। ध्वज सदैव ऊंचा रहे, जिससे हमारे राष्ट्र का मान-सम्मान हमेशा बना रहे, राष्ट्रप्रेम जीवन की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

ध्वज शक्ति प्रदान करने वाला व प्रेम रूपी अमृत का संचार करता है। ध्वज वीरों में आनंद पैदा करता है, यह हमारी मातृभूमि (भारत माता) का तन-मन सर्वस्व है। ध्वज सदैव ऊंचा रहे, तिरंगे को देख दुश्मनों के मन में भय उत्पन्न होता है। राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों - केसरिया, सफेद व हरे रंग से बना है और इसके केंद्र में नीले रंग से बना अशोक चक्र है। सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में है। सफेद पट्टी के

मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है, जो जीवन के सदैव प्रगतिशील होने को दर्शाता है। इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी के चौड़ाई के बराबर है। इसमें 24 तीलियां हैं।

भारत के राष्ट्रीय ध्वज के ऊपरी पट्टी केसरिया रंग देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्मचक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है। अतः राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा में राष्ट्र का दर्शन है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के नागरिकों की आशाएं व आकांक्षाओं को दर्शाता है। राष्ट्रीय ध्वज हमारे राष्ट्रीय गर्व एवं चेतना का प्रतीक है।

भारतीय राष्ट्रध्वज तिरंगे की अभिकल्पना पिंगली वेंकैभांनद ने की थी। तिरंगा के वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1907 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था। इसे 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके बाद भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में तिरंगे का अर्थ भारतीय राष्ट्र ध्वज है। आजादी के 75वें वर्ष पूरे होने का जश्न राष्ट्र 'अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा है।

विजयी विश्व ध्वज प्यारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृभूमि का तन मन सारा,
ध्वज ऊंचा रहे हमारा ।।

अनामिका सिंह

स्नातकोत्तर,
समाजशास्त्र
बोकारो स्टील सिटी।

उज्ज्वल भारत के लिए सुरक्षित बचपन जरूरी

डॉ. प्रभाकर कुमार
मनोवैज्ञानिक - सह- पूर्व सदस्य, बाल कल्याण समिति, बोकारो।

बच्चे ही देश का कल हैं। उनका बचपन, उनका हित और उनके अधिकारों की रक्षा कर तथा उनका सही मार्गदर्शन कर ही हम उन्हें सबल राष्ट्र-निर्माण की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। उज्ज्वल भारत के निर्माण हेतु सुरक्षित बचपन आवश्यक है। बच्चों के चार अधिकारों को जीने देना, विकास, सुरक्षा व सहभागिता अधिकार में वर्गीकृत किया गया है। जीने के अधिकार के अंतर्गत बढ़ती भ्रूण हत्या पर ध्यानाकर्षण अत्यंत आवश्यक है। समाज मे घटते लिंगानुपात, लिंगभेद एक चिंता की बात है। एक तरफ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के नारे की ओर ध्यान, तो दूसरी तरफ लिंग जांचने हेतु चोरी-छिपे अल्ट्रासाउंड करवाने की होड़, बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। देश के कई राज्यों मे घटता पुरुष-महिला लिंगानुपात चिंतनीय विषय है। समय रहते सरकार को ध्यान देने की जरूरत है, ताकि लिंग असमानता को दूर किया जा सके और स्वस्थ समाज का सृजन हो सके।

बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए शुद्ध समाजीकरण की प्रक्रिया पर ध्यान देने की जरूरत है। पालन-पोषण, परवरिश पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। माता-पिता अभिभावकों को बच्चों के साथ मित्रवत रहने की जरूरत है। आज बच्चों मे नशे की आदतों, बाल-अपराध की घटनाओं मे वृद्धि व्यापक स्तर पर देखी जा रही है। समाजीकरण के सभी कारकों पर विशेष ध्यानाकर्षण की जरूरत है, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

विकास के अधिकार के तहत मनोरंजन, खेलकूद, संतुलित भोजन आहार, विकास के सभी कारकों पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है, ताकि शिक्षा के साथ-साथ समग्र व्यक्तित्व विकास हो पाए। सुरक्षा के अधिकार के तहत सुरक्षित वातावरण दिए जाएं। बढ़ते बाल अपराधों से उन्हें बचाया जा सके। जागरुकता के माध्यम से बच्चों को हरसंभव जागरूक किए जाएं। किसी भी अकल्पनीय स्थिति से बचाव हेतु आत्मरक्षा के टिप्स बच्चों को बताएं। बच्चों के टॉल फ्री नंबर से उन्हें परिचित कराएं। सभी भयावह परिस्थितियों से उन्हें बचाने हेतु संवेदनशील रहें। बाल अधिकारों व कानून के प्रति उन्हें जागरूक बनाते रहें। माता-पिता अभिभावकों की यह भी जवाबदेही है कि सुरक्षित स्पर्श, असुरक्षित स्पर्श के बीच अपने बच्चों को अंतर बतलवाएं, बच्चों के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों के प्रति सचेत रहें और बच्चों के दोस्त बनकर उन्हें परवरिश दें।

बच्चों को सहभागिता का अधिकार भी है। बच्चों को भी अभिव्यक्ति स्वंत्रत्रता की आजादी दें। उनके कहे बातों का समर्थन दें, ताकि बच्चों मे आत्मविश्वास पैदा किया जा सके। सुरक्षित बचपन, सुरक्षित राष्ट्र की परिकल्पना को साकार रूप दे सकती है। इसके लिए बच्चों को बाल-उत्पीड़न की सभी घटनाओं से बचाव की जरूरत है। बाल अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाए जाने की जरूरत है। बाल विवाह, बालश्रम, बाल यौन व्यवहार, पोक्सो कानून 2012, किशोर न्याय अधिनियम 2015, ग्रामीण पृष्ठभूमि में बाल विवाह के माध्यम से बाल दुर्व्यापार, बाल दुर्व्यवहार, बच्चों को दी जाने वाली विभिन्न यातनाओं के प्रकारों, बच्चों के सहयातार्थ आपातकालीन टॉल फ्री नंबर, बच्चों के हितधारकों की अद्यतन जानकारी, बाल कल्याण पुलिस अधिकारी, बाल मित्र मानकों की विस्तारपूर्वक जानकारी, बाल कानून आदि मुद्दों पर माता-पिता, अभिभावक, समाज, समुदाय को जागरूकता के माध्यम से संवेदशील बनाया जा सके।

सरकारी प्रयासों में बच्चों की जो योजनाएं हैं, उन योजनाओं की जानकारी ग्रामीण स्तर तक ले जाने की जरूरत है। कोरोनाकाल में प्रधानमंत्री चिल्ड्रन योजना, अनाथ बच्चों के लिए स्पॉन्सरशिप योजना आदि की जानकारी गांवों तक सहज बनाने की जरूरत है। जिला बाल संरक्षण इकाई का समन्वय गांव, वार्ड, प्रखंड स्तर के बाल संरक्षण इकाई के साथ हों। जिले मे बाल सरंक्षण कमेटी का गठन हों, ताकि बच्चों के हेतु कई सुझाव उपायुक्त सह- अध्यक्ष, जिला बाल संरक्षण इकाई को प्राप्त होते रहें। बाल उत्पीड़न से प्रभावित पीड़िता के सहायातार्थ विधिक सेवा प्राधिकरण से मिलने वाली सुविधाओं को सहज बनाया जा सके, आर्थिक, मानसिक, भावनात्मक मदद की जा सके, ताकि परिवार को संबल किया जा सके। आर्थिक मदद का प्रावधान है, पर सहजता के साथ क्रियान्वयन की कमी देखी जाती है। त्यागे गए बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया सरल बनाए जाएं। बच्चों के लिऐ काम कर रहे लोग संवेदशील प्रकृति के हों, ताकि बाल मन को अच्छी तरह समझ सकें। सुरक्षित बचपन ही सुरक्षित राष्ट्र की संकल्पना को मूर्तता की ओर ले जा सकती है। उज्ज्वल भारत के लिए सुरक्षित बचपन जरूरी है। बच्चे ही भावी देश के कर्णधार हैं। जिस तरह का बचपन होगा, उस तरह की राष्ट्र की संस्कृति हमारे सामने दिखेगी।

दीदी का तिरंगा

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

एक संस्मरण

तिरंगा फहराते ही जय का घोषनाद गूंज उठा। पुलकित स्वर में सभी ने राष्ट्रीय गान गाया। फिर शुरू हुआ बच्चों और महिलाओं का रंगारंग कार्यक्रम। सभी कार्यक्रम उत्साहवर्धक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक थे। सोसायटी के गार्डों ने परेड मार्च ऐसा सुंदर किया, मानो जन्म-जन्मांतर सैनिक हों और बिन ट्रेनिंग परेड, उनके लिए बाएं हाथ का खेल हो। गार्ड-परेड की सफलता का श्रेय सोसायटी सचिव के नाम था। उन्होंने बाहर से इस्टेकटर हायर कर उनलोगों को ट्रेनिंग दिलवाई थी।

सारा कार्यक्रम हिन्दी में होता देख श्यामली आश्चर्यचकित थी। क्योंकि, बेंगलुरू शहर की सोसायटी में हिन्दी? असंभव सा दिखता है। बेंगलुरु को मिनी इंग्लैंड कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। यहां तो अनपढ़ आया भी अंग्रेजी में महारथ हासिल किए बैठी है। वह अपने कन्नड़ भाषा के बहुत से शब्दों के बदले अंग्रेजी शब्दों से काम चलाती है। इसे कहते हैं, 'हाटक दे फाटक लेना।'

यहां हर सोसायटी में बहुत से कपल या परिवार हिन्दीभाषी हैं। पर, सभी-के-सभी लंदनभाषी। उनका कोई दोष नहीं। कॉनवेंट के पढ़े बच्चों से हिन्दी की उम्मीद बेमानी है। पंद्रह अगस्त को ध्वज नीचे से ऊपर जाता है। अपने फ्लैट सेवन्थ फ्लोर से श्यामली ने तीन ध्वजारोहण देखा। तीनों ने ऊपर ही ऊपर झंडा फहरा दिया था। यहां किसी को सही-गलत की जानकारी देने का मतलब था, 'आ बैल मुझे मार।' बच्चों का कार्यक्रम देख श्यामली अपने बचपन, कक्षा तीन में लौट गई थी, आज से अड़तालीस-उनचास वर्ष पहले, जब उसने 'आओ बच्चे तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' गीत पर डांस कर सभी का मन मोह लिया था। नृत्य-संगीत खेल-कूद के सभी कार्यक्रमों में प्रथम स्थान का प्राइज ले घर पहुंची, तो मां का आंसुओं से आर्द्र चेहरा देख शकदम रह गई। उसे अपना पुरस्कार दिखाने का साहस न रहा। विजया दीदी के दोनों बच्चे मां के पास थे। उनके बच्चों का यहां रहना कोई नई बात न थी।

थोड़ी देर बाद पता चला कि विजया दीदी नहीं रहीं। पंखे से झूल जान दे दी थीं। श्यामली उनके घर की दौड़ पड़ी। पुलिस ने घेराबंदी लगा दी थी। जीजाजी से पूछताछ चल रही थी। दीदी के छोटे भाई मृदुल भैया रोते हुए जीजाजी पर आरोप लगा रहे थे। पुलिस उन्हें न पकड़ती तो वे जीजाजी को मार ही डालते। जितने मुंह, उतनी बातें हो रही थीं। उनकी बातों का सार यह था कि लव मैरेज कभी सफल नहीं होता। प्रारंभ में प्रेम सागर दिखने वाला यह विवाह या तो तलाक में बदल जाता है या जोड़े में से किसी एक को अपनी जान देनी पड़ती है। एक महिला पुलिस विजया दीदी के जेवर उतार, पारदर्शी पैकेट में रख रही थी। उनके गले का बड़ा-सा पेंडल दूर से चमक रहा था। यह वह पेंडल था, जिसमें लहराता हुआ तिरंगा झलकता था। इसे उनके बड़े भैया ने राखी में उपहार-स्वरूप दिया था। दोनों भाई-बहन पक्के देशभक्त थे। एक एक्सीडेंट में बड़े भैया के बैकुंठवासी बन जाने कारण वे पेंडल को गले से नहीं उतारती थीं।

पचास-पचपन वर्ष पहले छोटे शहर की लड़कियों का ग्रेजुएशन होना और बैंक में नौकरी करना, आसमान से तारें तोड़ने जैसा था। विजया दीदी देखने में ही सुंदर न थीं, बल्कि पढ़ने में भी काफी तेज थीं। टेन्थ में आते ही ताऊजी उनकी शादी के लिए अपनी चप्पल घिसने शुरू कर दिए थे। ढंग का घर-वर न मिलने से वे काफी परेशान थे। उनकी परेशानी दूर की थी विजया दीदी ने। नौकरी लगते ही वे जिद पर आ गईं, अपने पांच वर्ष पुराने प्रेम-संबंध को परिणय सूत्र में बांधने के लिए। लड़का जाति-बिरादरी का था, इसलिए ताऊ जी सहर्ष तैयार हो गए। उस समय यह प्रेम विवाह काफी चर्चा में था। उसी शहर में दोनों दो अलग-अलग बैंकों में कार्यरत थे। दीदी ने लोन ले आलीशान मकान भी बना लिया था।

विवाह के एक वर्ष बाद ही दोनों में खटपट शुरू हो गई थी। खटपट का मुख्य कारण था दीदी का देशभक्त होना और जीजाजी का सेक्युलर होना। जब अपने तर्क पर जीजाजी हारने लगते तो मार-पिटाई पर उतर आते। कई बार तो दीदी हॉस्पिटलाइज भी हुईं थीं। लड़ते-झगड़ते दस वर्ष बीत गए थे। इधर, सुनने में आ रहा था कि जीजाजी, ऑफिस की नई सेक्युलर कलिग (सहकर्मी) के मोह-पाश में बंध दूसरी शादी पर आमादा हैं। उस कलिग के कारण दीदी की रोज पिटाई होती थी।

पूछताछ के दौरान जीजाजी ने अपनी जेब से एक पत्र निकाल इंस्पेक्टर को दिया। पत्र में लिखा था, 'निर्मल, तुम्हें याद है...? आज के दिन हम मिले थे। न याद हो तो घर की सजावट और केक देख याद कर लेना। आज मैं तुम्हें आजाद कर रही हूं। अपनी मौत का जिम्मेदार खुद हूं। मेरे शरीर पर जो चोट के निशान हैं, वे मेरे खुद के हैं। एक एहसान करना, कफन के साथ मेरे ऊपर वह चुन्नी जरूर डाल देना, जिसे मैंने तिरंगे में डाई कराई थी।'

एक कोने में दीदी का रुमाल गिरा देख श्यामली ने उसे उठा अपने पास छुपा लिया। बाहर आ देखी तो वह भी दीदी का तिरंगा था।

अपने क्षेत्र में देश का प्रथम मान्यता-प्राप्त संस्थान

नामांकन सूचना

स्थापित : 1990

इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एडुकेशन एण्ड रिसर्च

Health Institute Road, Beur, Patna-2 (Recognised by the Govt. of Bihar, RCI, IAP & ISPO)

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना से स्थायी संबंधन-प्राप्त

Admission is going on into following courses for the Academic Session 2023-24

Please visit : www.iiher.com, Mob. : 9264459295, 7070096603, 9709999603, 9431016169

COURSES OFFERED

NAME OF COURSES		ELIGIBILITY
MPT	(Master of Physiotheraphy)	BPT
MOT	(Master of Occupational Theraphy)	BOT
BPT	(Bachelor of Physiotheraphy)	I.Sc. (Bio)
BASLP	(Bachelor of Audiology and Speech Language Pathology)	I.Sc.
B. OPHTH.	(Bachelor of Ophthalmology)	I.Sc. (Bio)
BMLT	(Bachelor of Medical Laboratory Technology)	I.Sc. (Bio)
BMRIT	(Bachelor of Medical Radio Imaging Technology)	I.Sc.
D.Ed. (Spl. Edu.)	D. Ed. Special Education (HI)	10+2
DPT	(Diploma in Physiotheraphy)	I.Sc. (Bio)
D-Xray	(Diploma in X-Ray Technology)	I.Sc. (Bio)
DMLT	(Diploma in Medical Laboratory Technology)	I.Sc. (Bio)
DOTA	(Diploma in Operation Theater Assistant)	I.Sc. (Bio)
DECG	(Diploma in ECG)	I.Sc. (Bio)
CMD	(Certificate in Medical Dressing)	Matric

Lateral Entry & Abridged Degree		Eligibility
ABPT	(Bachelor of Physiotherapy Abridged)	DPT
BMLT (LE)	(Bachelor of Medical Laboratory Technology LE)	DMLT
B.OPTH. (LE)	(Bachelor of Ophthalmology LE)	D.OPHTH.
BMRIT (LE)	(Bachelor of Medical Radio Imaging Technology LE)	D-X-Ray

PATLIPUTRA VIDYAPEETH

Affiliated to CBSE, New Delhi

Health Institute Road, Beur, Patna-2

Special Features

- Well Stocked Library
- Fully Wi-Fi Campus
- Transport Facility
- Swimming Pool
- Indoor and Outdoor Games
- Smart Class Rooms
- Remedial classes for slow learners
- Bio Lab, Physics Lab, Chemistry Lab, Computer Lab
- Whole campus under CCTV Surveillance

– डॉ. अनिल सुलभ
निदेशक प्रमुख

Contact : 7488412808/ 8340421475/ 9264459295/ 9386745004

सशक्त सैन्य-ताकत, सशक्त भारत

सतीश कुमार झा
कारगिल विजय में
शामिल पूर्व सैनिक।

बीते दिनों नूंह की घटना का पूरा देश साक्षी रहा। एक संसद सदस्य सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान भारत माता की जय बोलने को लेकर लगभग हाथापाई पर उतर आए। कुछ महीनों पहले कन्हैयालाल और उमेश कोल्हे जैसे लोगों की गर्दनें मजहबी कट्टरपंथियों द्वारा उतार दी गईं। खालिस्तानी समर्थकों के प्रदर्शन दिख रहे हैं। पूर्वोत्तर में विदेशी शक्तियों की मदद से माहौल बिगाड़ा जा रहा है। देश में चौड़ी होती ये भ्रंश रेखाएं युद्धकाल का संकेत नहीं दे रहीं तो यह और क्या है? स्पष्ट रूप से हमें अपनी पुख्ता तैयारी करनी होगी।

वस्तुतः, शांति का काल राष्ट्र के लिए स्थिरता, विकास, शक्ति अर्जन एवं भविष्य की तैयारियों का समय होता है। शांतिकाल के दायित्वों को विस्मृत करने के दुष्परिणाम हमने देखे हैं। जब मौर्य, गुप्त, कनिष्क और ललितादित्य के साम्राज्यों से लेकर यहां तक कि अंग्रेजों ने भी पश्चिमोत्तर में हमारी सीमाओं की रक्षा की है तो स्पष्ट है कि यही भारतवर्ष की स्वाभाविक सीमा है। देश के बंटवारे की ये नकली विभाजक रेखाएं हमारे भाग्य की रेखाएं नहीं हैं। कल जब हम समर्थ होंगे तो इतिहास की लहरों के सामने रेत की लकीरों की तरह ये मिट जाएंगी। हमारी पूर्वी सीमाएं कभी उस तरह से समस्या नही रहीं।

समस्या तो उत्तरी सीमाएं भी न होतीं, लेकिन हमारे अयोग्य शासक इसके मूल में रहे। पाकिस्तान बनाकर ब्रिटिश सरकार ने पश्चिमी दिशा में भारत के संभावित शक्ति विस्तार को जान-बूझकर निष्प्रभावी कर दिया। जहां सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पराजय हुई थी, आज वहां पाकिस्तान बना हुआ है। अगर सेल्यूकस की पराजय न हुई होती तो मौर्य साम्राज्य स्थिर न होता। शेष विश्व से व्यापारिक संबंध न बने होते। समृद्धि और शक्ति का मार्ग बाधित रहता। उसी तरह आज पाकिस्तान एक शत्रु ही नहीं, बल्कि एक बाधा है, जो हमारी राह रोके खड़ा है।

हमारी सांप्रदायिक समस्या देश की आंतरिक स्थितियों को अब इस तरह प्रभावित करने लगी है कि वह घोर सांप्रदायिकता के साथ-साथ क्षेत्रीय अलगाव का भी कारण बन रही है। यह सांप्रदायिकता बिहार और उत्तर प्रदेश में जातीयता का अवलंब बनकर संकट खड़ा कर रही है। बंगाल और केरल में यही सांप्रदायिकता आतंकी विभाजनकारी अभियान का आश्रय बन चुकी है। पीएफआई और अलकायदा के अतिरिक्त आईएस की भारत में संगठित होने की सूचनाएं हैं। इस सांप्रदायिक विभाजन से भारतवर्ष के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो रहा है। शांतिकालीन प्रविधानों से युद्धकाल का नियंत्रण असंभव सा होता जा रहा है।

हम अतीत से ही आसन्न संकटों के प्रति जाग्रत नहीं रहे। कश्मीर 1947 से ही पाकिस्तान के लिए नाक का सवाल बना रहा है। एक तिहाई कश्मीर उसके अवैध कब्जे में पहले से है। बाकी कब्जाने का कुत्सित अभियान उसने छेड़ रखा है। कश्मीर पर कब्जा एवं भारत का इस्लामीकरण ही उसका लक्ष्य है। इसके लिए हम कौन सी काट तैयार कर रहे हैं? पारंपरिक रूप से हम रक्षात्मक देश रहे हैं।

संकटों के बावजूद आक्रामक सैन्य सशक्तीकरण हमारी नीति ही नहीं रही। हमने तो युद्ध भी हमेशा रक्षात्मक किया है। 1947-48 के पाकिस्तानी आक्रमण के फलस्वरूप कश्मीर युद्ध में पंडित नेहरू ने सुरक्षा परिषद से युद्धविराम करा लिया। 1965 में हम लाहौर के करीब थे, लेकिन हमने स्वयं युद्धविराम घोषित कर दिया। 1971 का युद्ध हम अपने नहीं, बांग्लादेश के हित में लड़े। फिर शिमला समझौते में सामरिक विजय को कूटनीति के स्तर पर गंवा दिया गया। परिणामस्वरूप समस्याएं जस की तस बनी रहीं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि जल्द ही देश-दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। ऐसे में बड़ा सवाल उठता है कि आर्थिक शक्ति की रक्षा बाहरी एवं आंतरिक सामरिक शक्ति के अभाव में कैसे संभव होगी? शत्रु तो अंदर भी हैं। चीन हमारे समक्ष आंतरिक शत्रुओं के नियंत्रण का एक बड़ा उदाहरण है।

रूस-यूक्रेन युद्ध में हमने देखा है कि आर्थिक एवं सैन्यशक्ति का सहयोग एक दूसरे के लिए कितना आवश्यक है। पुतिन यदि सामरिक दृष्टि से जागरूक न रहते तो वह यूक्रेन के रूप में अपनी सीमाओं पर एक पाकिस्तान जैसा सिरदर्द बन जाने देते। नाटो संगठन उनकी घेराबंदी कर यूरोप में उन्हें सीमित कर देता। हालांकि, पुतिन ने ऐसा नहीं होने दिया और युद्ध का चुनाव किया।

आर्थिक समृद्धि के साथ यदि सामरिक शक्ति-सामर्थ्य नहीं होता तो इसके बड़े भयानक परिणाम सामने आते हैं। हम इसके भुक्तभोगी रहे हैं। हमारी इस्लामिक गुलामी का दौर दसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। इस्लामिक आक्रमण से पूर्व हम विश्व के सबसे समृद्ध देश थे। विश्वप्रसिद्ध आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन ने अपने विशद अध्ययन में सिद्ध किया है कि प्राचीन विश्व की अर्थव्यवस्था का 55 से 57 प्रतिशत भारत और चीन के नियंत्रण में था। उसमें भारत तो चीन से भी आगे रहा। वहीं, भारत कालांतर में सैन्यशक्ति के अभाव में विश्व का सबसे समृद्ध देश होने के बावजूद जुनूनी मजहबी लुटेरों से पराजित होकर गुलामी के लंबे दौर में दाखिल हो गया। स्मरण रहे कि अमेरिका अपनी आर्थिक शक्ति की रक्षा सामरिक शक्ति से करता है। हमारे राजनीतिक नेतृत्व में भू-राजनीतिक समझ का अभाव हमारी पराजयों का प्रमुख कारण रहा है। यदि हमें एक सक्षम-समृद्ध अर्थव्यवस्था बनना है तो हमें स्वयं को एक प्रभावी सामरिक शक्ति भी बनाना होगा। इसके लिए हम किसी साझेदारी पर निर्भर न होकर अपने दम पर आगे बढ़ें तभी हित सुरक्षित हो पाएंगे।

लेकिन हमें पूर्ण विश्वास है कि मोदी के नेतृत्व में सुदृढ़ सेना की बदौलत भारत तीसरी अर्थव्यवस्था को प्राप्त भी करेगा और सामरिक दृष्टि से सेना को और भी ज्यादा मजबूत किया जाएगा, जिससे कि हमारी सेना किसी भी परिस्थिति में निपटने के लिए हमेशा तैयार रहेगी। बस इतना कहना चाहता हूं कि राष्ट्र सर्वोपरि सभी के लिए होना चाहिए और उसके लिए हम सभी को आगे आकर नए राष्ट्र के निर्माण के लिए खड़े होना चाहिए।

जय हिंद, जय भारत!

लघु उद्योगों के कारण भारत सोने की चिड़िया : महाजन

चरखे से चंद्रयान... एमएसएमई के एक्सपो में स्वावलंबी भारत-निर्माण का आह्वान

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संयोजक अश्विनी महाजन ने कहा है कि किसी समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, लेकिन यह सब भारत के लघु उद्यमियों के कारण था क्योंकि भारतीय उद्यमी तब भी बेहतरीन किस्म के उत्पाद तैयार करते थे। उन्होंने कहा कि भारत एक समय पूरी दुनिया के कुल उत्पाद का 35 फीसदी तक का सामान तैयार करता था। श्री महाजन ने ये बातें शनिवार को नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित तीन दिवसीय एमएसएमई एक्स्पो-2023 के तीसरे एवं अंतिम दिन के पहले सत्र में कही। इसका विषय, 'चरखे से चंद्रयान : टेक्नोलॉजी, इनोवेशन- स्टार्टअप इको सिस्टम' था। महाजन ने दावा किया कि आज के विकसित देशों के लोग जब जंगल में घूमते थे, तब भारत के लघु उद्यमी बेहतरीन किस्म के उत्पाद तैयार करते थे। आजादी के बाद एक समय सरकार की मानसिकता एवं सोच निजी क्षेत्र को उपेक्षित करके सार्वजनिक क्षेत्र को बढ़ावा देने की रही, लेकिन इसी प्रकार की नीतियों के कारण रूस जैसा देश पिछड़ गया। बदलते समय के साथ सरकारों ने भारत में निजी क्षेत्र को भी बढ़ावा दिया, जिसके परिणाम सबके सामने हैं। उन्होंने दावा किया कि स्वदेशी जागरण मंच की आपत्ति के बाद ही सरकार द्वारा ओएनडीसी प्लेटफॉर्म लाया गया। इससे ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर लगाम लगी है। तीसरे दिन के पहले सत्र की शुरुआत में वियतनाम के राजदूत हुई टुम टॉम ने कहा कि भारत एवं वियतनाम के पुराने एवं गहरे संबंध रहे हैं। कइ मामलों में दोनों देशों की सोच एक ही जैसी है। उन्होंने कहा कि वियतनाम की इकोनोमी में 80 फीसदी योगदान एमएसएमई क्षेत्र का ही है।वहीं, टीआरएआई (ट्राई) के महानिदेशक अनिल कुमार भारद्वाज ने केन्द्र सरकार द्वारा तकनीक के क्षेत्र में किए जा रहे नए नवाचारों एवं पहलों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि विकास और ग्रोथ के लिए आज तकनीक का इस्तेमाल बेहद जरुरी है, वरना हम पिछड़ जाएंगे। जबकि ट्राई के सचिव रघुनंदन शर्मा ने कहा कि वर्तमान सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप ट्राई कनेक्टिविटी, डिवाइस एवं डिजीटल स्कील्स के लिए लगातार काम कर रहा है जिसके बहुत अच्छे परिणाम आ रहे हैं।

अपराह्न में एमएसएमई एक्स्पो-2023 के समापन अवसर पर भाजपा के पूर्व उपाध्यक्ष श्याम जाजू एवं दिल्ली भाजपा के पूर्व अध्यक्ष आदेश गुप्ता मौजूद रहे। श्याम जाजू एवं आदेश गुप्ता ने अपने संबोधन में बीते नौ सालों में केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार के कार्यकाल में हुए बदलावों की जानकारी दी। दोनों भाजपा नेताओं ने बताया कि कैसे मोदी सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के कारण आम जनता के बीच आत्मविश्वास पैदा हुआ है।

एमओयू पर हस्ताक्षर

इस मौके पर स्वदेशी जागरण मंच (एसजेएम) और एमएसएमई- डेवलपमेंट फोरम (डीएफ) के बीच स्वावलंबी भारत अभियान के लिए समझौता पत्रों (एमओयू) हुआ, जिसमें सहकारिता, रोजगार एवं स्वावलंबन का संकल्प लिया गया। स्वदेशी जागरण मंच की ओर से अश्विनी महाजन एवं दीपक शर्मा मौजूद थे, जबकि एमएसएमई डेवलपमेंट फोरम के तरफ से ग्लोबल चेयरमैन रजनीश गोयनका भी सभी सत्रों में उपस्थित रहे। संचालन कार्य जानेमाने अर्थशास्त्री शरद कोहली ने किया।

वोट बैंक जरूरी : गोयनका

एमएसएमई के चेयरमैन रजनीश गोयनका ने कहा कि एमएसएमई के क्षेत्र में कारगर नीति बावत सरकारों एवं राजनीतिक दलों की पॉलिटिकल विल बने, यह हमारा निरंतर प्रयास रहा है। गोयनका ने बताया कि वर्तमान में सरकारी आंकड़ों के अनुसार करीब सात करोड़ एमएसएमई की इकाईयां हैं, जिनसे करीब 12 करोड लोग जुड़े हुए हैं। अब यदि एक परिवार में पांच सदस्य भी हों तो करीब 60 करोड़ मतदाता होते हैं।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल हो स्तब्ध खड़ा है
जंगल का दुख बहुत बड़ा है
साधु अमन-इच्छा करते पर
हत्यारे हत्या को तत्पर
दोनों को देखे वन, बहती
रोज सुबह आँखों से अश्रुधार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
झुंड हाथियों का वन में है
उनकी मस्ती सावन में है
नदी, झील, तालों में पानी
जल-क्रीड़ा की हो मनमानी
झुंड घूमता रहता हरदम
इस जंगल से उस जंगल पार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

कुमार मनीष अरविन्द

मिथिला वर्णन
हिन्दी साप्ताहिक

देश-विदेश वर्णन

Postal Reg. No.- DNB- 072/2021-23
बोकारो मंगलवार 15.08.2023
News & E-paper : www.varnanlive.com

लोकतंत्र की जननी है भारत : राष्ट्रपति

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने देशवासियों को 77वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए कहा है कि यह दिन हम सब के लिए गौरवपूर्ण और पावन है। चारों ओर उत्सव का वातावरण देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह प्रसन्नता और गर्व की बात है कि कस्बों और गांवों में, यानी देश में हर जगह बच्चे, युवा और बुजुर्ग, सभी उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस के पर्व को मनाने की तैयारी कर रहे हैं। हमारे देशवासी बड़े उत्साह के साथ 'आजादी का अमृत महोत्सव'मना रहे हैं।

उन्होंने स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर कहा कि स्वाधीनता दिवस का उत्सव मुझे मेरे बचपन के दिनों की याद भी दिलाता है। अपने गांव के स्कूल में स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने की हमारी खुशी रोके नहीं रुकती थी। जब तिरंगा फहराया जाता था, तब हमें लगता था, जैसे हमारे शरीर में बिजली सी दौड़ गई हो। देशभक्ति के गौरव से भरे हुए हृदय के साथ हम सब राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते थे तथा राष्ट्रगान गाते थे। मिठाइयां बांटी जाती थीं और देशभक्ति के गीत गाए जाते थे, जो कई दिनों तक हमारे मन में गूंजते रहते थे। यह मेरा सौभाग्य रहा कि जब मैं स्कूल में शिक्षक बनी तो मुझे उन अनुभवों को फिर से जीने का अवसर प्राप्त हुआ।

उन्होंने कहा, जब हम बड़े होते हैं तो हम अपनी खुशी को बच्चों की तरह व्यक्त नहीं कर पाते, लेकिन मुझे विश्वास है कि राष्ट्रीय पर्वों से जुड़ी देशभक्ति की गहरी भावना में तनिक भी कमी नहीं आती है। स्वतंत्रता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हम केवल एक व्यक्ति ही नहीं हैं, बल्कि हम एक ऐसे महान जन-समुदाय का हिस्सा हैं, जो अपनी तरह का सबसे बड़ा और जीवंत समुदाय है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों का समुदाय है।

जब हम स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाते हैं तो वास्तव में हम एक महान लोकतन्त्र के नागरिक होने का उत्सव भी मनाते हैं। हममें से हर एक की अलग-अलग पहचान है। जाति, पंथ, भाषा और क्षेत्र के अलावा, हमारी अपने परिवार और कार्य-क्षेत्र से जुड़ी पहचान भी होती है। लेकिन हमारी एक पहचान ऐसी है, जो इन सबसे ऊपर है और हमारी वह पहचान है भारत का नागरिक होना। हम सभी समान रूप से इस महान देश के नागरिक हैं। हम सब को समान अवसर और अधिकार उपलब्ध हैं तथा हमारे कर्तव्य भी समान हैं।

लेकिन, ऐसा हमेशा नहीं था। भारत लोकतंत्र की जननी है और प्राचीन काल में भी हमारे यहां जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाएं विद्यमान थीं। किन्तु लंबे समय तक चले औपनिवेशिक शासन ने उन लोकतान्त्रिक संस्थाओं को मिटा दिया था। 15 अगस्त, 1947 के दिन देश ने एक नया सवेरा देखा। उस दिन हमने विदेशी शासन से तो आजादी हासिल की ही, हमने अपनी नियति का निर्माण करने की स्वतंत्रता भी प्राप्त की।

हमारी स्वाधीनता के साथ विदेशी शासकों द्वारा उपनिवेशों को छोड़ने का दौर शुरू हुआ और उपनिवेशवाद समाप्त होने लगा। हमारे द्वारा स्वाधीनता के लक्ष्य को प्राप्त करना तो महत्वपूर्ण था ही, लेकिन उससे भी अधिक उल्लेखनीय है हमारे स्वाधीनता संग्राम का अनोखा तरीका। महात्मा गांधी तथा अनेक असाधारण एवं दूरदर्शी विभूतियों के नेतृत्व में हमारा राष्ट्रीय आंदोलन अद्वितीय आदर्शों से अनुप्राणित था। गांधीजी तथा अन्य महानायकों ने भारत की आत्मा को फिर से जगाया और हमारी महान सभ्यता के मूल्यों का जन-जन में संचार किया। भारत के ज्वलंत उदाहरण का अनुसरण करते हुए हमारे स्वाधीनता संग्राम की आधारशिलाझ ह्यसत्य और अहिंसाह्न को पूरी दुनिया के अनेक राजनीतिक संघर्षों में सफलतापूर्वक अपनाया गया है।

उन्होंने कहा- स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर मैं भारत के नागरिकों के साथ एकजुट हो कर सभी ज्ञात और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। उनके असंख्य बलिदानों से भारत ने विश्व समुदाय में अपना स्वाभिमान-पूर्ण स्थान फिर से प्राप्त किया।

उन्होंने देश में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर विशेष ध्यान दिए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी देशवासियों से महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकता देने का आह्वान किया।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं !
सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-ऑपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)

स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।
डॉ. धीरेन्द्र करमाली
भीष्म मेमोरियल नर्सिंग होम
तेनुघाट रोड, गोमिया।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।

बसंत कुमार साहु
परियोजना पदाधिकारी
कथारा क्षेत्र (सीसीएल)।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।

ए. के. श्रीवास्तव
परियोजना पदाधिकारी
स्वांग, गोमिया।

झारखंड के निवासियों सहित समस्त देशवासियों को 77वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें।

झारखंड रत्न डॉ. राजेन्द्र कुमार हाजरा
एक्यूपंक्चर चिकित्सक,
संरक्षक, भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी (भारत) एवं
छात्र क्लब चिकित्सक मंच।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।
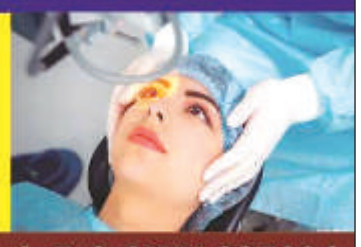
E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)